Pariksha Saathi — राजस्थान सामान्य ज्ञान नोट्स

1 टॉपिक • 11 पाठ • अपडेट 28 अक्टूबर 2026

ये नोट्स एक AI सहायक ने लिखे हैं - वही पाठ जो Pariksha Saathi ऐप में हैं। किसी विषय-विशेषज्ञ ने इनकी समीक्षा नहीं की है। ज़रूरी तथ्य आधिकारिक स्रोत या मानक पाठ्यपुस्तक से मिला लें। कोई गलती दिखे तो बताएँ: parikshasaathi.com/contact/

इन परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में शामिल राजस्थान सामान्य ज्ञान के टॉपिक: Rajasthan Police Constable, RPSC RAS Prelims, Rajasthan Patwari। हर टॉपिक के अंत में उसके मुफ़्त अभ्यास प्रश्नों का लिंक है; पूरे मॉक टेस्ट Pariksha Saathi ऐप और वेबसाइट पर मुफ़्त हैं।

विषय-सूची

राजस्थान सामान्य ज्ञान

दोहराव पत्रक

राजस्थान सामान्य ज्ञान

राजस्थान सामान्य ज्ञान

परीक्षा क्या पूछती है: राजस्थान GK, RPSC RAS प्रारंभिक परीक्षा और राजस्थान पुलिस कांस्टेबल पेपर का सबसे भारी खंड है। प्रश्न लगभग पूरी तरह तथ्यात्मक होते हैं: किसने कौन-सा नगर कब बसाया, कौन-सी नदी कहाँ से निकलती है, कौन-सा दुर्ग UNESCO सूची में है, कौन-सा मेला किस जिले में लगता है, और एकीकरण के सात चरण। तिथियाँ, जिले और 'भारत में प्रथम' तथ्य इस विषय की मुद्रा हैं। इसे अलग-अलग तथ्यों के बजाय जुड़े हुए समूहों (शासक-नगर-दुर्ग-वर्ष) के रूप में पढ़ें।

प्राचीन और पूर्व-मध्यकालीन इतिहास: कालीबंगा (हनुमानगढ़ जिला, घग्घर तट) हड़प्पाकालीन स्थल है जो प्रारंभिक हड़प्पा स्तर के जुते हुए खेत के साक्ष्य और अग्निवेदिकाओं के लिए प्रसिद्ध है। उदयपुर के निकट आहड़ से ताम्रपाषाणिक आहड़-बनास संस्कृति का नाम पड़ा। मत्स्य महाजनपद की राजधानी विराटनगर (आधुनिक बैराठ, अब कोटपूतली-बहरोड़ जिले में) थी, जहाँ अशोक का भाब्रू (बैराठ) लघु शिलालेख मिला। गुर्जर-प्रतिहारों ने, जिनमें मिहिर भोज ने कन्नौज से शासन किया, 8वीं से 10वीं शताब्दी तक उत्तर भारत पर प्रभुत्व रखा। शाकंभरी और अजमेर के चौहानों में पृथ्वीराज तृतीय हुए, जिन्होंने 1191 में तराइन में मुहम्मद गौरी को हराया और 1192 में उससे पराजित हुए।

राजपूत राज्य: मेवाड़ की स्थापना 8वीं शताब्दी में गुहिल वंश के बप्पा रावल ने चित्तौड़ में की; बाद में इसके शासक सिसोदिया कहलाए। चित्तौड़गढ़ ने तीन प्रसिद्ध घेरे देखे: 1303 में अलाउद्दीन खिलजी (रानी पद्मिनी का जौहर), 1535 में गुजरात का बहादुर शाह (कर्णावती, पन्ना धाय ने उदय सिंह को बचाया) और 1568 में अकबर (जयमल और पत्ता शहीद)। राणा कुंभा ने कुंभलगढ़ और विजय स्तंभ बनवाए। राणा सांगा 16 मार्च 1527 को खानवा में बाबर से हारे (कुछ स्रोतों में 17 मार्च)। महाराणा प्रताप ने 18 जून 1576 को हल्दीघाटी में आमेर के मानसिंह के नेतृत्व वाली अकबर की सेना से युद्ध किया; भामाशाह ने उनके संघर्ष को धन दिया। मारवाड़: राव जोधा ने 1459 में जोधपुर बसाया; बाद में दुर्गादास राठौड़ ने औरंगज़ेब के विरुद्ध अजीत सिंह की रक्षा की। आमेर: सवाई जयसिंह द्वितीय ने 1727 में वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य के साथ जयपुर बसाया और जंतर मंतर बनवाया। बीकानेर की स्थापना 1488 में राव बीका ने और जैसलमेर की 1156 में भाटी वंश के रावल जैसल ने की।

आधुनिक इतिहास और एकीकरण: 1818 में लगभग सभी राजपूताना रियासतों ने अंग्रेज़ों से सहायक संधियाँ कीं। 1857 का विद्रोह राजस्थान में 28 मई को नसीराबाद से शुरू हुआ; कोटा में जयदयाल और मेहराब खान ने विद्रोह किया और आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह ने अंग्रेज़ों को चुनौती दी। मेवाड़ का बिजौलिया किसान आंदोलन (1897 से) विजय सिंह पथिक ने चलाया; गोविंद गुरु का भगत आंदोलन 1913 के मानगढ़ हत्याकांड में समाप्त हुआ। हर रियासत में प्रजामंडल आंदोलनों ने उत्तरदायी शासन की माँग की। एकीकरण सात चरणों में हुआ: मत्स्य संघ (18 मार्च 1948), राजस्थान संघ (25 मार्च 1948), उदयपुर सहित संयुक्त राजस्थान (18 अप्रैल 1948), सरदार पटेल द्वारा 30 मार्च 1949 को उद्घाटित वृहत् राजस्थान (राजस्थान दिवस), मत्स्य सहित संयुक्त वृहत् राजस्थान (15 मई 1949), सिरोही (जनवरी 1950) और अंत में 1 नवंबर 1956 को अजमेर-मेरवाड़ा, आबू रोड और सुनेल। हीरालाल शास्त्री प्रथम मुख्यमंत्री थे; मोहनलाल सुखाड़िया सबसे लंबे समय (1954 से 1971) तक रहे।

भूगोल: राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है (3,42,239 वर्ग किमी, देश का लगभग 10.4 प्रतिशत) और श्रीगंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर तथा बाड़मेर से होकर पाकिस्तान के साथ 1,070 किमी सीमा साझा करता है। अरावली, भारत की सबसे प्राचीन वलित पर्वतमाला, दिल्ली से पालनपुर तक तिरछी फैली है; माउंट आबू का गुरु शिखर (1,722 मीटर) इसकी सर्वोच्च चोटी है। इसके पश्चिम में थार मरुस्थल (मरुस्थली) है। चंबल (बाँधों का क्रम: गांधी सागर, राणा प्रताप सागर, जवाहर सागर, कोटा बैराज) एकमात्र बारहमासी नदी है; बनास पूर्णतः राज्य के भीतर बहने वाली सबसे लंबी नदी है; लूनी बालोतरा के बाद खारी हो जाती है और कच्छ के रण में विलीन हो जाती है; माही कर्क रेखा को दो बार काटती है। इंदिरा गांधी नहर पंजाब के हरिके बैराज से निकलती है। सांभर भारत की सबसे बड़ी अंतर्देशीय खारी झील है। केवलादेव (भरतपुर) UNESCO विश्व धरोहर स्थल है; रणथंभौर (सवाई माधोपुर) और सरिस्का (अलवर) बाघ अभयारण्य हैं; तालछापर (चूरू) काले हिरण के लिए प्रसिद्ध है। जैसलमेर सबसे शुष्क जिला है; सबसे अधिक वर्षा वाले जिले दक्षिण और दक्षिण-पूर्व में हैं (आईएमडी के मानसून सामान्य वर्षा के अनुसार प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, झालावाड़ और सिरोही अग्रणी हैं)।

अर्थव्यवस्था और संसाधन: जावर (उदयपुर) में जस्ता और सीसा, खेतड़ी (झुंझुनूं) में ताँबा, मकराना (नागौर क्षेत्र, अब डीडवाना-कुचामन जिले में) में संगमरमर, झामरकोटड़ा (उदयपुर) में रॉक फॉस्फेट, बाड़मेर और बीकानेर में लिग्नाइट। राजस्थान सरसों, बाजरा, ग्वार और ऊन में भारत में अग्रणी है। भीलवाड़ा राजस्थान का मैनचेस्टर है; कोटा डोरिया, जयपुर की ब्लू पॉटरी, सांगानेर व बगरू की छपाई और कोटा स्टोन प्रसिद्ध उत्पाद हैं। ऊर्जा: सूरतगढ़ तापीय (श्रीगंगानगर), रावतभाटा परमाणु संयंत्र (चित्तौड़गढ़) और भड़ला सौर पार्क (फलोदी, पहले जोधपुर जिले का भाग)।

राजव्यवस्था: विधान सभा एकसदनीय है और इसमें 200 सीटें हैं; राजस्थान लोकसभा में 25 और राज्यसभा में 10 सदस्य भेजता है। उच्च न्यायालय जोधपुर में है और जयपुर में उसकी पीठ है। गुरुमुख निहाल सिंह प्रथम राज्यपाल थे। भारत की पंचायती राज व्यवस्था का उद्घाटन नेहरू ने 2 अक्टूबर 1959 को नागौर में किया। RPSC का मुख्यालय अजमेर में है।

संस्कृति: राज्य प्रतीक हैं चिंकारा और ऊँट (पशु), गोडावण (पक्षी), रोहिड़ा (पुष्प) और खेजड़ी (वृक्ष)। घूमर, कालबेलिया (UNESCO 2010), गैर, चरी, तेरहताली, कच्छी घोड़ी और जसनाथी अग्नि नृत्य प्रमुख लोकनृत्य हैं; रावणहत्था, अलगोज़ा और मोरचंग वाद्य हैं; मांगणियार और लंगा पश्चिमी राजस्थान के वंशानुगत संगीतकार हैं। मेले: पुष्कर (कार्तिक पूर्णिमा), नागौर पशु मेला, बेणेश्वर (आदिवासी कुंभ), कोलायत का कपिल मुनि मेला, रामदेवरा, गोगामेड़ी और अजमेर उर्स। लोकदेवता पाबूजी, गोगाजी, तेजाजी, रामदेवजी और देवनारायण का अपना-अपना जिला और कथा है। चित्रकला शैलियों में मेवाड़, मारवाड़, बूंदी, कोटा, जयपुर और किशनगढ़ (निहालचंद की बणी-ठणी) हैं; फड़ चित्र शाहपुरा से और पिछवाई नाथद्वारा से आते हैं। खेजड़ली (1730, अमृता देवी) का बिश्नोई बलिदान चिपको आंदोलन के पूर्ववर्ती के रूप में याद किया जाता है।

बचने योग्य जाल: तराइन 1191 (पृथ्वीराज जीते) बनाम 1192 (गौरी जीता)। विजय स्तंभ (कुंभा) बनाम कीर्ति स्तंभ (जैन)। राजस्थान दिवस 30 मार्च 1949 है, 1 नवंबर 1956 नहीं। मेहरानगढ़ छह UNESCO पहाड़ी दुर्गों में नहीं है। केवलादेव UNESCO है; सांभर केवल रामसर है। उच्च न्यायालय जोधपुर में है, राजधानी जयपुर में नहीं। हीरालाल शास्त्री प्रथम मुख्यमंत्री थे पर टीकाराम पालीवाल प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री थे।

उदाहरण

- चित्तौड़गढ़ के घेरे क्रम से: 1303 अलाउद्दीन खिलजी (पद्मिनी का जौहर), 1535 गुजरात का बहादुर शाह (कर्णावती), 1568 अकबर (जयमल और पत्ता)।
- नगर संस्थापक और वर्ष: जैसलमेर 1156 (रावल जैसल), जोधपुर 1459 (राव जोधा), बीकानेर 1488 (राव बीका), उदयपुर 1553 (उदय सिंह द्वितीय; कुछ स्रोतों में 1559), जयपुर 1727 (सवाई जयसिंह द्वितीय)।
- तीन निर्णायक युद्ध: तराइन 1192 (गौरी ने पृथ्वीराज तृतीय को हराया), खानवा 1527 (बाबर ने राणा सांगा को हराया), हल्दीघाटी 1576 (मानसिंह ने प्रताप के विरुद्ध अकबर की सेना का नेतृत्व किया)।
- चंबल के बाँध प्रवाह की दिशा में, स्मृति-सूत्र 'गा-रा-ज-को': गांधी सागर (MP), राणा प्रताप सागर (रावतभाटा), जवाहर सागर, कोटा बैराज।
- एकीकरण के सात चरण: मत्स्य संघ (मार्च 1948), राजस्थान संघ (मार्च 1948), उदयपुर सहित संयुक्त राजस्थान (अप्रैल 1948), वृहत् राजस्थान (30 मार्च 1949), मत्स्य सहित (मई 1949), सिरोही (1950), अजमेर-मेरवाड़ा (1 नवंबर 1956)।
- खनिज-स्थान जोड़े: जावर जस्ता, खेतड़ी ताँबा, मकराना संगमरमर, झामरकोटड़ा रॉक फॉस्फेट, बाड़मेर लिग्नाइट, कोटा स्टोन।
- छह UNESCO पहाड़ी दुर्ग (2013): चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, रणथंभौर, गागरोन, आमेर, जैसलमेर। मेहरानगढ़ और जूनागढ़ सूची में नहीं हैं।
- 2026 तक राजस्थान में चार UNESCO विश्व धरोहर प्रविष्टियाँ: केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (1985), जंतर मंतर जयपुर (2010), पहाड़ी दुर्ग (2013), जयपुर शहर (2019)। कालबेलिया नृत्य अमूर्त धरोहर सूची (2010) में है।
- लोकदेवता और जिला: पाबूजी (कोलू, फलोदी), गोगाजी (गोगामेड़ी, हनुमानगढ़), तेजाजी (खरनाल, नागौर), रामदेवजी (रामदेवरा, जैसलमेर), देवनारायण (आसींद, भीलवाड़ा)।
- नदियाँ उनके अंत के अनुसार: चंबल यमुना में मिलती है; बनास चंबल में; लूनी कच्छ के रण में समाप्त होती है; माही और साबरमती खंभात की खाड़ी में गिरती हैं।
- याद रखने योग्य संख्याएँ: विधान सभा 200, लोकसभा 25, राज्यसभा 10, पाकिस्तान सीमा 1,070 किमी, गुरु शिखर 1,722 मीटर, कुंभलगढ़ दीवार 36 किमी।
- भारत में प्रथम तथ्य: पंचायती राज की शुरुआत 2 अक्टूबर 1959 को नागौर में; खेजड़ली 1730 (363 बिश्नोई) वृक्ष-रक्षा का सबसे प्रसिद्ध प्रारंभिक बलिदान और चिपको का पूर्ववर्ती।

> **त्वरित दोहराव:** सबसे बड़ा राज्य, पाकिस्तान सीमा 1,070 किमी; गुरु शिखर 1,722 मीटर अरावली की सर्वोच्च चोटी; बप्पा रावल ने मेवाड़, राव जोधा ने जोधपुर 1459, जयसिंह द्वितीय ने जयपुर 1727 बसाया; खानवा 1527, हल्दीघाटी 1576; वृहत् राजस्थान 30 मार्च 1949 (राजस्थान दिवस), प्रथम CM हीरालाल शास्त्री; विधान सभा 200, HC जोधपुर; पंचायती राज नागौर 2 अक्टूबर 1959; सांभर सबसे बड़ी खारी झील, केवलादेव UNESCO; जावर जस्ता, खेतड़ी ताँबा, मकराना संगमरमर; कालबेलिया UNESCO 2010; छह पहाड़ी दुर्ग UNESCO 2013; खेजड़ली 1730 अमृता देवी।

प्राचीन राजस्थान: कालीबंगा, आहड़-बनास संस्कृति, मत्स्य और प्रतिहार

प्राचीन राजस्थान का महत्त्व: राजस्थान में भारत में मानव बसाव के सबसे लंबे प्रमाणों में से एक मिलता है। बनास, बेड़च, चंबल और लूनी की घाटियों में पाषाण युग के औज़ार मिले हैं, और राज्य में लगभग हर बाद के चरण के प्रमुख स्थल हैं: बागोर में मध्यपाषाण काल, कालीबंगा में हड़प्पा सभ्यता, आहड़, बालाथल, गिलूंद और गणेश्वर में ताम्रपाषाण काल, बैराठ में महाजनपद और मौर्य काल, तथा गुर्जर-प्रतिहार जैसे आरंभिक मध्यकालीन राज्य। परीक्षाओं में हर स्थल को उसके ज़िले, नदी, उत्खननकर्ता और प्रमुख खोज के साथ जोड़कर पूछा जाता है, इसलिए इन्हें इसी क्रम में याद करें।

बागोर और पाषाण युग: भीलवाड़ा के पास कोठारी नदी के किनारे स्थित बागोर भारत के सबसे बड़े मध्यपाषाणकालीन स्थलों में से एक है। वी.एन. मिश्र द्वारा उत्खनित इस स्थल से सूक्ष्म पाषाण उपकरण (माइक्रोलिथ) और भारत में पशुपालन के सबसे पुराने प्रमाणों में से कुछ मिले हैं, मुख्यतः भेड़ और बकरी के।

लूनी नदी के किनारे तिलवाड़ा एक अन्य मध्यपाषाणकालीन स्थल है। ऐसे स्थल केवल शिकार और संग्रहण से पशुपालन की ओर हुए बदलाव को दिखाते हैं, इसीलिए पशुपालन की शुरुआत से जुड़े प्रश्नों में बागोर का नाम आता है।

कालीबंगा, हड़प्पाकालीन नगर: कालीबंगा का अर्थ है 'काली चूड़ियाँ', क्योंकि इसके टीलों पर चूड़ियों के टुकड़े मिले; यह हनुमानगढ़ ज़िले में घग्घर नदी (जिसे अनेक विद्वान प्राचीन सरस्वती मानते हैं) के तट पर स्थित है। 1952 में ए. घोष (अमलानंद घोष) ने इसे हड़प्पाकालीन स्थल के रूप में पहचाना, और 1961 से 1969 के बीच बी.बी. लाल तथा बी.के. थापर ने इसका उत्खनन किया। यहाँ दो स्तर हैं: एक प्राक्-हड़प्पा बस्ती और एक विकसित हड़प्पाकालीन नगर, जिसमें किलेबंद दुर्ग-क्षेत्र (सिटाडेल) और अलग से किलेबंद निचला नगर है। यहाँ की सबसे अधिक पूछी जाने वाली खोजें हैं: प्राक्-हड़प्पा स्तर से आड़ी-तिरछी कूँड़ों वाला जुता हुआ खेत, जो विश्व में कहीं भी मिले ऐसे सबसे पुराने खेतों में से एक है, और अग्निवेदिकाओं की पंक्तियाँ, जो धार्मिक अनुष्ठानों की ओर संकेत करती हैं। यहाँ एक प्राचीन भूकंप के प्रमाण भी सुरक्षित हैं। उत्तर में ही स्थित सोथी के नाम पर एक प्राक्-हड़प्पा मृद्भांड परंपरा का नाम पड़ा है।

आहड़-बनास संस्कृति: दक्षिण-पूर्वी राजस्थान के ताम्रपाषाणकालीन (ताँबा-पत्थर युग के) लोगों का नाम उदयपुर में आहड़ (आयड़) नदी के किनारे स्थित आहड़ के टीले, जिसे स्थानीय रूप से धूलकोट कहते हैं, और उस बनास बेसिन पर पड़ा है जहाँ इनके अधिकांश गाँव स्थित हैं। ताँबे के काम के कारण आहड़ का प्राचीन नाम ताम्रवती बताया जाता है; 1950 के दशक से कई चरणों में इसका उत्खनन हुआ, जिसमें सबसे विस्तृत उत्खनन एच.डी. सांकलिया ने किया। इस संस्कृति की पहचान हैं: सफ़ेद अलंकरण वाले काले और लाल मृद्भांड, ताँबे की कुल्हाड़ियाँ और अंगूठियाँ, पत्थर और मिट्टी के घर, तथा ऐसी खेती जिसमें चावल भी शामिल था। राजसमंद ज़िले का गिलूंद इसी संस्कृति का एक बड़ा स्थल है। उदयपुर के पास बालाथल, जिसका उत्खनन 1993 से वी.एन. मिश्र के निर्देशन में हुआ, आहड़ संस्कृति का एक किलेबंद गाँव है; यहाँ मिला लगभग 2000 ई.पू. का एक कंकाल भारत में कुष्ठ रोग का सबसे पुराना ज्ञात कंकालीय प्रमाण है।

गणेश्वर, ताँबे का केंद्र: उत्तर-पूर्वी राजस्थान में नीम का थाना के पास कांतली नदी के उद्गम पर स्थित गणेश्वर को भारत की ताम्रयुगीन संस्कृतियों की जननी कहा जाता है। आर.सी. अग्रवाल और विजय कुमार द्वारा उत्खनित इस स्थल से बड़ी संख्या में ताँबे की वस्तुएँ मिली हैं, जिनमें तीर के फलक, मछली पकड़ने के काँटे, भाले की नोकें और कुल्हाड़ियाँ शामिल हैं, जो पास की खेतड़ी पट्टी के अयस्क से बनी थीं। इनमें से कई औज़ार हड़प्पाई औज़ारों से मिलते-जुलते हैं, इसलिए गणेश्वर को हड़प्पाई नगरों को ताँबा भेजने वाला केंद्र माना जाता है। इससे जुड़े स्थल मिलकर गणेश्वर-जोधपुरा संस्कृति बनाते हैं।

मत्स्य, बैराठ और मौर्य: 6वीं शताब्दी ई.पू. के सोलह महाजनपदों में से मत्स्य राजस्थान में था; यह जयपुर-अलवर-भरतपुर क्षेत्र में फैला था और इसकी राजधानी विराटनगर थी, जो जयपुर के उत्तर में आज का बैराठ है। महाभारत इसे राजा विराट से जोड़ता है, जिनके दरबार में पांडवों ने अज्ञातवास का वर्ष बिताया था। बैराठ से मौर्यकाल के दो अभिलेख मिले हैं: भाब्रू अभिलेख, जिसे 1837 में कैप्टन बर्ट ने खोजा और जो अब कोलकाता में रखा है, जिसमें अशोक ने बुद्ध, धम्म और संघ में अपनी आस्था प्रकट की है, तथा एक लघु शिलालेख। बीजक की पहाड़ी पर एक गोलाकार बौद्ध मंदिर के अवशेष भी इसी काल के हैं। मौर्यों के बाद इस क्षेत्र पर गणराज्यों का अधिकार रहा: टोंक के पास नगर के आसपास मालव, उत्तर में यौधेय, अलवर-भरतपुर क्षेत्र में अर्जुनायन और चित्तौड़गढ़ के पास माध्यमिका (नगरी) में शिवि। 1948 में रियासतों के पहले संघ के लिए मत्स्य नाम फिर से अपनाया गया।

गुप्त और गुर्जर-प्रतिहार: समुद्रगुप्त के प्रयाग (इलाहाबाद) स्तंभ अभिलेख में उल्लेख है कि मालव, अर्जुनायन और यौधेय उसे कर देते थे, और 1946 में भरतपुर के पास मिली बयाना निधि गुप्तकालीन स्वर्ण सिक्कों का सबसे बड़ा भंडार है। आगे चलकर भीनमाल, जालोर और मंडोर के आसपास का क्षेत्र गुर्जरत्रा, अर्थात गुर्जरों की भूमि, कहलाने लगा। भीनमाल (भिल्लमाल) विद्या का केंद्र था: गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त ने 628 ई. में यहीं अपना ब्रह्मस्फुट सिद्धांत लिखा, और कवि माघ भी यहीं के थे। इसी क्षेत्र से गुर्जर-प्रतिहारों का उदय हुआ, जो स्वयं को राम के द्वारपाल (प्रतिहार) लक्ष्मण का वंशज बताते थे। एक शाखा ने मंडोर पर शासन किया; नागभट्ट प्रथम की साम्राज्यवादी शाखा ने 8वीं शताब्दी में सिंध की ओर से अरबों के बढ़ाव को रोका। नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज जीता, और मिहिरभोज (उपाधि आदिवराह) ने वहाँ से एक ऐसे साम्राज्य पर शासन किया जिसने त्रिपक्षीय संघर्ष में पालों और राष्ट्रकूटों से लोहा लिया; अरब यात्री सुलेमान (851 ई.) ने उसकी घुड़सवार सेना की प्रशंसा की। जोधपुर के पास ओसियां के मंदिर प्रतिहार (महामारू) शैली के उदाहरण हैं, और बाद में पृथ्वीराज रासो ने प्रतिहारों को चार अग्निवंशी (अग्निकुल) राजपूत कुलों में गिना।

उदाहरण

- कालीबंगा (हनुमानगढ़, घग्घर के तट पर): 'काली चूड़ियाँ'; 1952 में ए. घोष ने पहचाना, बी.बी. लाल और बी.के. थापर ने उत्खनन किया (1961-69); जुता हुआ खेत और अग्निवेदिकाएँ।
- आहड़ (उदयपुर, आहड़/आयड़ नदी): टीला धूलकोट कहलाता है, प्राचीन नाम ताम्रवती; काले-लाल मृद्भांडों वाली आहड़-बनास ताम्रपाषाण संस्कृति का नाम इसी पर पड़ा।
- बागोर (भीलवाड़ा, कोठारी नदी): वी.एन. मिश्र द्वारा उत्खनित बड़ा मध्यपाषाणकालीन स्थल; भेड़-बकरी पालन के आरंभिक प्रमाण।
- बालाथल (उदयपुर के पास): आहड़ संस्कृति का किलेबंद गाँव; लगभग 2000 ई.पू. का कंकाल भारत में कुष्ठ रोग का सबसे पुराना कंकालीय प्रमाण है।
- गणेश्वर (नीम का थाना के पास, कांतली के उद्गम पर): 'ताम्रयुगीन संस्कृतियों की जननी'; खेतड़ी के अयस्क से बने ताँबे के तीर-फलक और मछली के काँटे, जो हड़प्पाई नगरों को भेजे जाते थे।
- मत्स्य महाजनपद: राजधानी विराटनगर (बैराठ); अशोक का भाब्रू अभिलेख (1837 में मिला) बुद्ध, धम्म और संघ का उल्लेख करता है।
- समुद्रगुप्त के प्रयाग अभिलेख में मालव, अर्जुनायन और यौधेय का उल्लेख है; बयाना निधि (1946) गुप्तकालीन स्वर्ण सिक्कों का सबसे बड़ा भंडार है।
- भीनमाल (भिल्लमाल): ब्रह्मगुप्त ने यहाँ 628 ई. में ब्रह्मस्फुट सिद्धांत लिखा; यह क्षेत्र गुर्जरत्रा कहलाता था।
- गुर्जर-प्रतिहार: गुर्जरत्रा (दक्षिण-पश्चिमी राजस्थान) में उदय; नागभट्ट प्रथम ने अरबों को रोका, नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज जीता, मिहिरभोज (आदिवराह) सबसे महान शासक था।

त्वरित दोहराव: बागोर मध्यपाषाणकालीन (कोठारी नदी, वी.एन. मिश्र); कालीबंगा हड़प्पाकालीन, घग्घर तट, हनुमानगढ़, जुता खेत और अग्निवेदिकाएँ, लाल-थापर 1961-69; आहड़ (धूलकोट, ताम्रवती) से आहड़-बनास संस्कृति का नाम; बालाथल में लगभग 2000 ई.पू. का कुष्ठ रोग वाला कंकाल; गणेश्वर ताँबा, कांतली का उद्गम; मत्स्य की राजधानी विराटनगर (बैराठ), भाब्रू अभिलेख; बयाना गुप्त निधि 1946; भीनमाल में ब्रह्मगुप्त 628 ई.; प्रतिहार गुर्जरत्रा से, मिहिरभोज का शासन कन्नौज से।

राजपूत राजवंश और मध्यकालीन राजस्थान: मेवाड़, मारवाड़, आमेर और चौहान

कुल और क्षेत्र: 8वीं शताब्दी से राजस्थान विभिन्न राजपूत कुलों में बँटा रहा: मेवाड़ में गुहिल (बाद में सिसोदिया), मारवाड़ और बीकानेर में राठौड़, ढूँढाड़ में कछवाहा, शाकंभरी, अजमेर, रणथंभौर और जालोर में चौहान, जैसलमेर में भाटी, तथा हाड़ौती (बूंदी और कोटा) में चौहानों की शाखा हाड़ा। चंदबरदाई का पृथ्वीराज रासो अग्निकुल की कथा देता है कि प्रतिहार, परमार, चालुक्य और चौहान कुल आबू पर्वत पर यज्ञ की अग्नि से उत्पन्न हुए; कर्नल जेम्स टॉड ने इन्हें विदेशी (सीथियन) मूल का माना, और गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने प्राचीन क्षत्रियों का वंशज।

चौहान: चौहानों का आरंभ वासुदेव के नेतृत्व में शाकंभरी (सांभर) से हुआ। अजयराज ने 12वीं शताब्दी के आरंभ में अजयमेरु (अजमेर) बसाया, अर्णोराज ने आनासागर झील बनवाई, और 'हरकेलि नाटक' के रचयिता विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) ने एक संस्कृत पाठशाला बनवाई, जिसे बाद में कुतुबुद्दीन ऐबक ने 'अढ़ाई दिन का झोंपड़ा' नामक मस्जिद में बदल दिया। पृथ्वीराज तृतीय ने 1191 में तराइन (हरियाणा में) में मुहम्मद गोरी को हराया, पर 1192 में वहीं उससे हार गया, जिससे उत्तर भारत तुर्कों के लिए खुल गया। रणथंभौर में हम्मीर देव ने 1301 तक अलाउद्दीन खिलजी का प्रतिरोध किया, और दुर्ग के पतन को राजस्थान का पहला साका माना जाता है। जालोर कान्हड़देव के समय 1311 में अलाउद्दीन के हाथों गिरा, जिसका वर्णन पद्मनाभ के 'कान्हड़दे प्रबंध' में है।

बप्पा रावल से कुंभा तक मेवाड़: बप्पा रावल ने 8वीं शताब्दी में चित्तौड़ पर अधिकार किया, और परंपरा उदयपुर के पास एकलिंगजी मंदिर का श्रेय उन्हें देती है; महाराणा एकलिंगजी को ही मेवाड़ का वास्तविक शासक मानते थे और स्वयं को उनका दीवान कहते थे। 1303 में अलाउद्दीन खिलजी ने रावल रत्नसिंह से चित्तौड़ छीन लिया; रानी पद्मिनी का जौहर और गोरा-बादल की वीरता लोककथा बन गई, जिसे मलिक मुहम्मद जायसी ने 'पद्मावत' (1540) में फिर से कहा, और अलाउद्दीन ने अपने पुत्र के नाम पर दुर्ग का नाम खिज्राबाद रखा। हम्मीर ने 14वीं शताब्दी में चित्तौड़ वापस लिया और सिसोदिया वंश की शुरुआत की। राणा कुंभा (1433-1468) ने 1437 में सारंगपुर में मालवा के महमूद खिलजी को हराया और इसकी स्मृति में चित्तौड़ में विजय स्तंभ बनवाया; परंपरा के अनुसार मेवाड़ के 84 दुर्गों में से 32 उसने बनवाए, जिनमें शिल्पी मंडन द्वारा रचित कुंभलगढ़ भी है। उसने 'संगीतराज' की रचना की और अभिनव भरताचार्य तथा हिंदू सुरत्राण जैसी उपाधियाँ धारण कीं।

राणा सांगा और महाराणा प्रताप: राणा सांगा (1509-1528) ने 1517 में खातोली में इब्राहिम लोदी को हराया और बाबर के विरुद्ध राजपूत संघ का नेतृत्व किया; बयाना में वह जीता, पर मार्च 1527 में भरतपुर के पास खानवा में बाबर के तोपखाने के सामने हार गया, जिसके बाद बाबर ने 'गाजी' की उपाधि ली। चित्तौड़ की घेराबंदी गुजरात के बहादुरशाह (1535) और अकबर (1567-68, जब जयमल और पत्ता दुर्ग की रक्षा करते हुए मारे गए) ने की; दुर्ग के पतन के बाद उदयसिंह द्वितीय ने 1559 में अपने बसाए उदयपुर को राजधानी बनाया। 1540 में जन्मे और 1572 में गोगुंदा में राज्याभिषिक्त महाराणा प्रताप ने 18 जून 1576 को हल्दीघाटी में आमेर के मानसिंह और आसफ खाँ के नेतृत्व वाली अकबर की सेना का सामना किया। हकीम खाँ सूर, भील सरदार राणा पूंजा और झाला मान, जिन्होंने शत्रु का ध्यान खींचने के लिए राजचिह्न धारण किए, प्रताप की ओर से लड़े, और उनका घोड़ा चेतक उन्हें सुरक्षित निकालते हुए मारा गया। जेम्स टॉड ने हल्दीघाटी को मेवाड़ की थर्मोपल्ली और दिवेर (1582) में प्रताप की विजय को मेवाड़ का मैराथन कहा। भामाशाह की आर्थिक सहायता से प्रताप ने मेवाड़ का अधिकांश भाग वापस जीता और 19 जनवरी 1597 को चावंड में उनका देहांत हुआ। उनके पुत्र अमरसिंह प्रथम ने 1615 में जहाँगीर से संधि की।

मारवाड़ और बीकानेर: राव सीहा ने 13वीं शताब्दी में मारवाड़ में राठौड़ शासन की नींव रखी; राव चूंडा ने मंडोर पर अधिकार किया, और राव जोधा ने 1459 में जोधपुर नगर और मेहरानगढ़ दुर्ग की स्थापना की। उनके पुत्र राव बीका ने 1488 में बीकानेर बसाया। राव मालदेव के विरुद्ध 1544 में गिरी-सुमेल के युद्ध में शेरशाह सूरी बड़ी कठिनाई से जीता और उसने कहा कि वह मुट्ठी भर बाजरे के लिए हिंदुस्तान की बादशाहत लगभग खो बैठा था। मोटा राजा उदयसिंह की पुत्री जगत गोसाईं, जिसका विवाह जहाँगीर से हुआ, शाहजहाँ की माता थी। 1678 में जसवंत सिंह की मृत्यु के बाद औरंगज़ेब ने मारवाड़ को हड़पना चाहा, तब दुर्गादास राठौड़ ने शिशु अजीत सिंह की रक्षा की।

आमेर, जैसलमेर और हाड़ौती: ढूल्हेराय के नेतृत्व में कछवाहों ने 12वीं शताब्दी में ढूँढाड़ में दौसा को राजधानी बनाकर शासन स्थापित किया और बाद में आमेर चले गए। राजा भारमल अकबर की अधीनता स्वीकार करने वाले पहले राजपूत शासक थे, जिन्होंने 1562 में अपनी पुत्री हरखा बाई का विवाह अकबर से किया; आमेर के मानसिंह प्रथम अकबर के प्रमुख सेनापति और काबुल, बिहार तथा बंगाल के सूबेदार बने। मिर्ज़ा राजा जयसिंह ने 1665 में शिवाजी के साथ पुरंदर की संधि की। भाटियों ने जैसलमेर से शासन किया, जिसे रावल जैसल ने 1156 में बसाया था। राव देवा के नेतृत्व में हाड़ाओं ने मीणाओं से बूंदी छीनी, और 1631 में शाहजहाँ द्वारा माधोसिंह को कोटा दिए जाने पर कोटा एक अलग राज्य बना।

जौहर, साका और मुगल-राजपूत समझौता: दुर्ग के पतन की आशंका होने पर स्त्रियों द्वारा अग्नि में आत्मबलिदान जौहर कहलाता था; केसरिया वस्त्र पहनकर पुरुषों का अंतिम युद्ध के लिए निकल पड़ना साका कहलाता था। चित्तौड़ ने तीन साके देखे (1303, 1535 और 1568), गागरोन ने दो (1423 में मालवा के होशंगशाह के विरुद्ध और 1444 में महमूद खिलजी के विरुद्ध), और जैसलमेर के ढाई साके प्रसिद्ध हैं। अकबर ने वैवाहिक संबंधों, ऊँचे मनसबों और अपने मूल राज्यों को वतन जागीर के रूप में बनाए रखने के अधिकार के द्वारा राजपूत शासकों को अपना साझेदार बनाया; 1570 के नागौर दरबार में बीकानेर और जैसलमेर के शासकों ने उसकी अधीनता स्वीकार की। 1679 में औरंगज़ेब द्वारा जज़िया फिर से लगाने और मारवाड़ पर कब्ज़े के प्रयास ने यह समझौता तोड़ दिया।

उदाहरण

- तराइन: 1191 में पृथ्वीराज तृतीय ने मुहम्मद गोरी को हराया; 1192 में गोरी जीता। तराइन हरियाणा में है, राजस्थान में नहीं।
- रणथंभौर 1301 (अलाउद्दीन के विरुद्ध हम्मीर देव) राजस्थान का पहला साका माना जाता है; जालोर 1311 में गिरा (कान्हड़देव)।
- चित्तौड़ के तीन साके: 1303 (अलाउद्दीन, पद्मिनी), 1535 (बहादुरशाह, कर्णावती), 1568 (अकबर, जयमल और पत्ता)।
- राणा कुंभा (1433-1468): सारंगपुर विजय 1437, विजय स्तंभ, कुंभलगढ़ (शिल्पी मंडन), उपाधियाँ अभिनव भरताचार्य और हिंदू सुरत्राण।
- खानवा, मार्च 1527: बाबर ने राणा सांगा को हराया; सांगा ने इससे पहले खातोली (1517) में इब्राहिम लोदी को हराया था।
- हल्दीघाटी, 18 जून 1576: अकबर की ओर से मानसिंह और आसफ खाँ; प्रताप की ओर से हकीम खाँ सूर, राणा पूंजा और झाला मान; टॉड के अनुसार 'मेवाड़ की थर्मोपल्ली'।
- दिवेर 1582: प्रताप की विजय, टॉड के अनुसार 'मेवाड़ का मैराथन'; प्रताप का देहांत 19 जनवरी 1597 को चावंड में; मेवाड़-मुगल संधि 1615।
- गिरी-सुमेल 1544: शेरशाह ने मालदेव को हराया और कहा कि वह 'मुट्ठी भर बाजरे के लिए' हिंदुस्तान लगभग खो बैठा था।
- आमेर के भारमल: अकबर की अधीनता मानने वाले पहले राजपूत शासक (1562); मिर्ज़ा राजा जयसिंह: शिवाजी के साथ पुरंदर की संधि (1665)।
- कोटा 1631 में बूंदी से अलग हुआ; अकबर का नागौर दरबार 1570; औरंगज़ेब ने 1679 में जज़िया फिर से लगाया।

> **त्वरित दोहराव:** पृथ्वीराज रासो में अग्निकुल की कथा; अजयराज ने अजमेर बसाया; तराइन 1191 में जीत, 1192 में हार; रणथंभौर 1301 पहला साका; चित्तौड़ के साके 1303, 1535, 1568; हम्मीर से सिसोदिया वंश; कुंभा: सारंगपुर 1437, विजय स्तंभ, कुंभलगढ़; खानवा 1527; हल्दीघाटी 18 जून 1576, दिवेर 1582; संधि 1615; जोधपुर 1459, बीकानेर 1488; गिरी-सुमेल 1544; भारमल-अकबर 1562; कोटा अलग 1631।

आधुनिक राजस्थान: 1857, किसान और जनजातीय आंदोलन तथा प्रजामंडल

मराठा आक्रमणों से ब्रिटिश संरक्षण तक: 1707 में औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार के झगड़ों से राजपूत राज्य कमज़ोर हो गए और सिंधिया तथा होल्कर जैसे मराठा सरदारों और पिंडारी दलों के शिकार बने। पिंडारी नेता अमीर खाँ को 1817 में अंग्रेज़ों के समर्थन से टोंक का नवाब बनाया गया, इसीलिए टोंक राजपूताना की एकमात्र मुस्लिम रियासत थी। इन आक्रमणों से थककर शासकों ने गवर्नर-जनरल लॉर्ड हेस्टिंग्स के अधीन ईस्ट इंडिया कंपनी का सहारा लिया, जिसके प्रतिनिधि चार्ल्स मेटकॉफ ने संधियों की बातचीत की।

1817-18 की संधियाँ: अधीनस्थ संधियों के एक ही दौर में लगभग हर राजपूत राज्य ने ब्रिटिश संरक्षण स्वीकार किया, स्वतंत्र विदेश नीति का अधिकार छोड़ दिया और खिराज (कर) देना स्वीकार किया। करौली ने सबसे पहले (नवंबर 1817 में) संधि की, जिसके कुछ ही महीनों में कोटा, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर, जयपुर और शेष राज्यों ने भी संधियाँ कीं; सिरोही ने सबसे अंत में, 1823 में संधि की। 1818 में दौलतराव सिंधिया ने अजमेर अंग्रेज़ों को सौंप दिया, और अजमेर-मेरवाड़ा रियासतों के बीच सीधे ब्रिटिश शासन वाला क्षेत्र बन गया। राजपूताना एजेंसी का संचालन गवर्नर-जनरल के एजेंट (AGG) द्वारा होता था, जिसका मुख्यालय अजमेर में और ग्रीष्मकालीन मुख्यालय माउंट आबू में था। राजकुमारों की शिक्षा के लिए 1875 में अजमेर में मेयो कॉलेज की स्थापना हुई।

1857 का विद्रोह: राजपूताना में छह ब्रिटिश सैनिक छावनियाँ थीं: नसीराबाद, नीमच, देवली, ब्यावर, एरिनपुरा और खेरवाड़ा। इस क्षेत्र में विद्रोह 28 मई 1857 को अजमेर के पास नसीराबाद से शुरू हुआ, और 3 जून को नीमच में विद्रोह हुआ। मारवाड़ में आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह चांपावत ने असंतुष्ट सामंतों और एरिनपुरा से आए जोधपुर लीजन के विद्रोही सैनिकों को एकजुट किया; उनकी सेना ने जोधपुर राज्य की सेना को हराया और सितंबर 1857 में जोधपुर के पॉलिटिकल एजेंट कैप्टन मॉक मेसन को मार डाला। कोटा में 15 अक्टूबर 1857 को लाला जयदयाल और मेहराब खाँ के नेतृत्व में राज्य की सेना ने विद्रोह किया, पॉलिटिकल एजेंट मेजर बर्टन को मार डाला और लगभग छह महीने तक नगर पर अधिकार रखा, जब तक मार्च 1858 में ब्रिटिश सेना ने उसे वापस नहीं ले लिया। 1858 में तात्या टोपे की सेनाएँ राजस्थान से होकर गुज़रीं। अधिकांश शासक अंग्रेज़ों के प्रति वफ़ादार रहे, इसलिए यहाँ विद्रोह का नेतृत्व राजाओं ने नहीं, बल्कि सैनिकों और स्थानीय ठाकुरों ने किया।

किसान आंदोलन: जागीरों (ठिकानों) में किसान भू-राजस्व के अतिरिक्त अनेक लाग-बाग (उपकर) चुकाते थे और बेगार (बिना मज़दूरी का श्रम) करते थे। 1897 में शुरू हुए मेवाड़ के बिजोलिया आंदोलन को प्रायः भारत का सबसे लंबा अहिंसक किसान आंदोलन कहा जाता है: इसके प्रमुख नेता साधु सीताराम दास, फिर 1916 से विजय सिंह पथिक, जिन्होंने ऊपरमाल पंच बोर्ड बनाया, और बाद में माणिक्यलाल वर्मा रहे, और यह 1941 में तभी समाप्त हुआ जब मेवाड़ सरकार ने अधिकांश माँगें मान लीं। पास के बेगूं (चित्तौड़गढ़) में रामनारायण चौधरी ने 1921 से आंदोलन चलाया, और ठाकुर के साथ हुए 1923 के समझौते को राज्य ने 'बोल्शेविक फैसला' कहकर ठुकरा दिया। बूंदी में पंडित नयनूराम शर्मा ने किसानों का नेतृत्व किया, और 2 अप्रैल 1923 को डाबी में पुलिस की गोलीबारी में झंडा गीत गाते हुए नानक भील शहीद हुए। अलवर राज्य के नीमूचाणा में 14 मई 1925 को किसानों की सभा पर हुई गोलीबारी में अनेक लोग मारे गए, और गांधीजी ने इसकी तुलना जलियाँवाला बाग से की।

दक्षिण के जनजातीय आंदोलन: 1858 में डूंगरपुर के बांसिया गाँव में एक बंजारा परिवार में जन्मे गोविंद गुरु ने 1883 में सम्प सभा की स्थापना की और भीलों में भगत आंदोलन फैलाया, जिसमें उन्होंने शराब और मांस छोड़ने तथा बेगार का विरोध करने का आह्वान किया। 17 नवंबर 1913 को राजस्थान-गुजरात सीमा पर बांसवाड़ा की मानगढ़ पहाड़ी पर एकत्र उनके हज़ारों अनुयायियों पर अंग्रेज़ अधिकारियों के नेतृत्व वाली सेना ने गोलियाँ चलाईं; स्थानीय विवरणों के अनुसार लगभग 1,500 लोग मारे गए, और मानगढ़ को आदिवासियों का जलियाँवाला कहा जाता है। 1921 में उदयपुर के झाड़ोल क्षेत्र के कोलियारी गाँव के मोतीलाल तेजावत ने चित्तौड़गढ़ के मातृकुंडिया से बेगार और भारी करों के विरुद्ध भीलों और गरासियों का एकी (एकता) आंदोलन शुरू किया, जिसके माँग-पत्र को 'मेवाड़ पुकार' कहा गया। 7 मार्च 1922 को नीमड़ा में उनके अनुयायियों की एक बड़ी सभा पर सेना ने गोलियाँ चलाईं।

राजनीतिक जागृति और प्रजामंडल: आरंभिक राष्ट्रवादियों में केसरी सिंह बारहठ थे, जिनके डिंगल सोरठों 'चेतावणी रा चूंगट्या' (1903) ने मेवाड़ के महाराणा फतेह सिंह को कर्ज़न के दिल्ली दरबार में जाने से रोक दिया; इनके अलावा जयपुर के अर्जुनलाल सेठी और खरवा के राव गोपाल सिंह भी प्रमुख थे।

1930 के दशक से प्रत्येक राज्य में प्रजामंडलों (जन-संगठनों) ने नागरिक अधिकारों और शासकों के अधीन उत्तरदायी शासन की माँग की: जयपुर (1931, बाद में जमनालाल बजाज और हीरालाल शास्त्री के नेतृत्व में), बीकानेर (1936), मेवाड़ (24 अप्रैल 1938, माणिक्यलाल वर्मा) और मारवाड़ लोक परिषद (1938, जयनारायण व्यास) प्रमुख थे। 1938 के कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन ने रियासतों की जनता से अपने आंदोलन स्वयं संगठित करने को कहा, और अनेक प्रजामंडल उसी वर्ष बने।

एक राज्य की ओर: स्वतंत्रता के समय राजपूताना में 19 रियासतें, 3 ठिकाने (लावा, कुशलगढ़ और नीमराणा) और ब्रिटिश शासित अजमेर-मेरवाड़ा प्रांत था। सरदार पटेल के अधीन रियासती मंत्रालय ने, जिसके सचिव वी.पी. मेनन थे, तय किया कि केवल वही रियासतें अलग इकाई रह सकती हैं जिनकी वार्षिक आय कम से कम एक करोड़ रुपये और जनसंख्या कम से कम दस लाख हो; केवल जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और उदयपुर इस कसौटी पर खरे उतरे। शेष को विलय करना पड़ा, और यह प्रक्रिया 18 मार्च 1948 से 1 नवंबर 1956 तक सात चरणों में चली, यानी कुल 8 वर्ष, 7 माह और 14 दिन।

उदाहरण

- 1817-18 की संधियाँ: सबसे पहले करौली (नवंबर 1817), सबसे अंत में सिरोही (1823); 1818 में सिंधिया ने अजमेर अंग्रेज़ों को सौंपा।
- टोंक: राजपूताना की एकमात्र मुस्लिम रियासत; पिंडारी नेता अमीर खाँ 1817 में इसका नवाब बना।
- 1857: सबसे पहले नसीराबाद (28 मई), फिर नीमच (3 जून), आउवा (कुशाल सिंह चांपावत, मॉक मेसन की हत्या), कोटा (15 अक्टूबर, मेजर बर्टन की हत्या)।
- 1857 में राजपूताना की छह छावनियाँ: नसीराबाद, नीमच, देवली, ब्यावर, एरिनपुरा और खेरवाड़ा।
- बिजोलिया (1897-1941): साधु सीताराम दास, विजय सिंह पथिक (ऊपरमाल पंच बोर्ड), फिर माणिक्यलाल वर्मा।
- बेगूं 1921 से (रामनारायण चौधरी, 1923 का 'बोल्शेविक फैसला'); बूंदी: 2 अप्रैल 1923 को डाबी में नानक भील शहीद।
- गोविंद गुरु: सम्प सभा 1883, भगत आंदोलन; मानगढ़ हत्याकांड 17 नवंबर 1913 (बांसवाड़ा)।
- मोतीलाल तेजावत: 1921 में मातृकुंडिया से एकी आंदोलन, माँग-पत्र 'मेवाड़ पुकार'; नीमड़ा गोलीकांड 7 मार्च 1922।
- प्रजामंडल: जयपुर 1931, बीकानेर 1936, मेवाड़ 1938 (माणिक्यलाल वर्मा), मारवाड़ लोक परिषद 1938 (जयनारायण व्यास)।
- स्वतंत्रता के समय: 19 रियासतें, 3 ठिकाने (लावा, कुशलगढ़, नीमराणा) और अजमेर-मेरवाड़ा।

> **त्वरित दोहराव:** 1817-18 की संधियाँ (पहले करौली, अंत में सिरोही 1823); अजमेर 1818 में सौंपा गया, AGG का मुख्यालय अजमेर; 1857 का आरंभ नसीराबाद 28 मई, आउवा (कुशाल सिंह), कोटा (मेजर बर्टन की हत्या); बिजोलिया 1897-1941 (सीताराम दास, पथिक, माणिक्यलाल वर्मा); बेगूं 1921; डाबी 1923 (नानक भील); नीमूचाणा 1925; गोविंद गुरु, सम्प सभा 1883, मानगढ़ 17 नवंबर 1913; एकी आंदोलन 1921 (तेजावत); प्रजामंडल 1931 से; 19 रियासतें, 3 ठिकाने।

राजस्थान का निर्माण: एकीकरण के सात चरण, राजव्यवस्था और राज्य प्रतीक

नाम: यह क्षेत्र लंबे समय तक राजपूताना कहलाता था; यह नाम सबसे पहले 1800 में जॉर्ज थॉमस ने प्रयोग किया। जेम्स टॉड ने अपनी पुस्तक 'एनाल्स एंड एंटीक्विटीज़ ऑफ़ राजस्थान' (1829) में राजस्थान नाम का प्रयोग किया। 1949 में बना संघ वृहत् राजस्थान कहलाया, और 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू होने के साथ राजस्थान नाम औपचारिक रूप से अपनाया गया। राज्य का निर्माण करने वाला एकीकरण इस भाग का सबसे अधिक पूछा जाने वाला विषय है, इसलिए हर चरण को उसकी तिथि, सदस्य रियासतों, राजधानी और नेताओं के साथ याद करें।

पहले तीन चरण (1948): पहला चरण 18 मार्च 1948 का मत्स्य संघ था, जिसमें अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली के साथ नीमराणा ठिकाना मिला; इसकी राजधानी अलवर थी, धौलपुर के उदयभान सिंह राजप्रमुख और शोभाराम कुमावत प्रधानमंत्री थे, और के.एम. मुंशी के सुझाए इस नाम ने प्राचीन मत्स्य जनपद की याद दिलाई। दूसरा चरण 25 मार्च 1948 का राजस्थान संघ था, जिसमें 9 रियासतें (कोटा, बूंदी, झालावाड़, टोंक, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, किशनगढ़ और शाहपुरा) कुशलगढ़ ठिकाने के साथ मिलीं; इसकी राजधानी कोटा थी, कोटा के महाराव भीम सिंह राजप्रमुख और गोकुल लाल असावा प्रधानमंत्री थे। तीसरा चरण 18 अप्रैल 1948 का संयुक्त राजस्थान था, जिसमें उदयपुर (मेवाड़) शामिल हुआ; इसका उद्घाटन जवाहरलाल नेहरू ने किया, उदयपुर राजधानी बना, महाराणा भूपाल सिंह राजप्रमुख और माणिक्यलाल वर्मा प्रधानमंत्री बने।

वृहत् राजस्थान से 1956 तक: चौथे चरण, वृहत् राजस्थान, का उद्घाटन सरदार पटेल ने 30 मार्च 1949 को किया, जब जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर लावा ठिकाने के साथ शामिल हुए; यही दिन राजस्थान दिवस के रूप में मनाया जाता है। जयपुर राजधानी बना, जयपुर के सवाई मानसिंह द्वितीय राजप्रमुख, भूपाल सिंह महाराजप्रमुख और हीरालाल शास्त्री प्रधानमंत्री बने; यह पदनाम बाद में मुख्यमंत्री हो गया। पाँचवाँ चरण, संयुक्त वृहत् राजस्थान, 15 मई 1949 को बना, जब शंकरराव देव समिति द्वारा वहाँ जनमत जानने के बाद मत्स्य संघ का विलय हुआ। छठे चरण में, 26 जनवरी 1950 को, आबू और देलवाड़ा तहसीलों को छोड़कर सिरोही जोड़ा गया, ये दोनों तहसीलें बंबई राज्य को मिलीं; तब राजस्थान राजप्रमुख के अधीन 'ख' श्रेणी (पार्ट B) का राज्य था। सातवाँ चरण 1 नवंबर 1956 को राज्य पुनर्गठन अधिनियम के अंतर्गत आया: अजमेर-मेरवाड़ा (जो तब तक हरिभाऊ उपाध्याय के मुख्यमंत्रित्व में 'ग' श्रेणी (पार्ट C) का राज्य था), बंबई से आबू-देलवाड़ा और मध्य भारत से सुनेल टप्पा जोड़े गए, जबकि सिरोंज मध्य प्रदेश को दे दिया गया। राजप्रमुख का पद समाप्त हुआ और गुरुमुख निहाल सिंह पहले राज्यपाल बने।

राजधानी और राज्य स्तरीय कार्यालय: जयपुर को राजधानी चुना गया, और पुरानी रियासतों के दावों में संतुलन के लिए प्रमुख कार्यालय दूसरे नगरों में बाँटे गए। उच्च न्यायालय जोधपुर में है; राजस्थान लोक सेवा आयोग, राजस्व मंडल और माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर में हैं; और शिक्षा निदेशालय बीकानेर में है। परीक्षाओं में यह बिंदु प्रायः पूछा जाता है कि राजधानी और उच्च न्यायालय अलग-अलग नगरों में हैं।

विधायिका और प्रतिनिधित्व: राजस्थान में एकसदनीय विधायिका, विधानसभा, है जिसमें 200 सदस्य हैं; यह संख्या 1977 के चुनाव से है, और यहाँ विधान परिषद नहीं है। संसद में राज्य की लोकसभा में 25 और राज्यसभा में 10 सीटें हैं। 1949 में पहले लोकप्रिय मंत्रिमंडल का नेतृत्व हीरालाल शास्त्री ने किया; 1952 के चुनाव के बाद टीकाराम पालीवाल पहले निर्वाचित मुख्यमंत्री बने, और मोहनलाल सुखाड़िया सबसे लंबी लगातार अवधि (1954-1971) तक इस पद पर रहे। बलवंतराय मेहता प्रतिरूप पर पंचायती राज लागू करने वाला राजस्थान पहला राज्य था: जवाहरलाल नेहरू ने 2 अक्टूबर 1959 को नागौर के बगदरी गाँव में इसका उद्घाटन किया।

न्यायपालिका: राजस्थान उच्च न्यायालय की स्थापना 29 अगस्त 1949 को जोधपुर में हुई, और कमलाकांत वर्मा इसके पहले मुख्य न्यायाधीश बने। जयपुर में एक खंडपीठ आरंभिक वर्षों में कार्यरत रही, 1958 में समाप्त कर दी गई और 1977 में फिर से स्थापित की गई; इस प्रकार न्यायालय जोधपुर में है और जयपुर में इसकी स्थायी खंडपीठ है।

राज्य प्रतीक: चिंकारा (भारतीय गज़ेल) वन्य श्रेणी में राज्य पशु है (1981), और 2014 में ऊँट को पशुधन श्रेणी में राज्य पशु घोषित किया गया। गोडावण (ग्रेट इंडियन बस्टर्ड) राज्य पक्षी है (1981)। मरुस्थल का कल्पवृक्ष कहलाने वाला खेजड़ी (प्रोसोपिस सिनेरेरिया) राज्य वृक्ष है (1983), और मारवाड़ का सागवान कहलाने वाला रोहिड़ा (टिकोमेला अंडुलेटा) राज्य पुष्प है (1983)। घूमर राज्य नृत्य और बास्केटबॉल राज्य खेल है।

उदाहरण

- चरण 1, मत्स्य संघ, 18 मार्च 1948: अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली और नीमराणा; राजधानी अलवर; नाम के.एम. मुंशी ने सुझाया।
- चरण 2, राजस्थान संघ, 25 मार्च 1948: कोटा, बूंदी, टोंक, किशनगढ़ और शाहपुरा सहित 9 रियासतें; राजधानी कोटा।
- चरण 3, संयुक्त राजस्थान, 18 अप्रैल 1948: उदयपुर शामिल; उद्घाटन नेहरू ने किया; प्रधानमंत्री माणिक्यलाल वर्मा।
- चरण 4, वृहत् राजस्थान, 30 मार्च 1949: जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर शामिल; उद्घाटन सरदार पटेल ने किया; राजस्थान दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- चरण 5, 15 मई 1949: मत्स्य संघ का विलय (शंकरराव देव समिति); चरण 6, 26 जनवरी 1950: आबू-देलवाड़ा के बिना सिरोही।
- चरण 7, 1 नवंबर 1956: अजमेर-मेरवाड़ा, आबू-देलवाड़ा और सुनेल टप्पा जुड़े, सिरोंज मध्य प्रदेश को; पूरी प्रक्रिया में 8 वर्ष, 7 माह और 14 दिन लगे।
- विधानसभा: एकसदनीय, 200 सीटें; लोकसभा में 25 और राज्यसभा में 10 सीटें।
- उच्च न्यायालय: जोधपुर, स्थापना 29 अगस्त 1949; जयपुर खंडपीठ 1977 में पुनः स्थापित; RPSC, राजस्व मंडल और माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर में।
- राज्य प्रतीक: पशु चिंकारा (1981) और ऊँट (2014), पक्षी गोडावण (1981), वृक्ष खेजड़ी और पुष्प रोहिड़ा (1983), नृत्य घूमर।
- पंचायती राज: भारत में सबसे पहले 2 अक्टूबर 1959 को नेहरू द्वारा नागौर के बगदरी गाँव में शुरू किया गया।

> **त्वरित दोहराव:** राजस्थान नाम 26 जनवरी 1950 को अपनाया गया; मत्स्य संघ 18 मार्च 1948 (अलवर); राजस्थान संघ 25 मार्च 1948 (कोटा); संयुक्त राजस्थान 18 अप्रैल 1948 (उदयपुर, नेहरू); वृहत् राजस्थान 30 मार्च 1949 (जयपुर, पटेल, राजस्थान दिवस); मत्स्य का विलय 15 मई 1949; सिरोही 26 जनवरी 1950; अजमेर-मेरवाड़ा 1 नवंबर 1956, पहले राज्यपाल गुरुमुख निहाल सिंह; विधानसभा 200, लोकसभा 25, राज्यसभा 10; उच्च न्यायालय जोधपुर 29 अगस्त 1949; पंचायती राज नागौर 2 अक्टूबर 1959।

राजस्थान का भूगोल: स्थिति, सीमाएँ और भौतिक विभाग

स्थिति और आकार: राजस्थान उत्तर-पश्चिमी भारत में लगभग 23°3' से 30°12' उत्तरी अक्षांश और 69°30' से 78°17' पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। इसकी आकृति लगभग विषमकोण चतुर्भुज जैसी है, जिसकी तुलना प्रायः पतंग से की जाती है। उत्तर से दक्षिण इसकी लंबाई 826 किमी और पूर्व से पश्चिम चौड़ाई 869 किमी है। कर्क रेखा राज्य के दक्षिणी भाग में बांसवाड़ा ज़िले से होकर गुज़रती है और डूंगरपुर की दक्षिणी सीमा को छूती है। प्रायः पूछे जाने वाले अंतिम बिंदु हैं: उत्तर में श्रीगंगानगर का कोणा गाँव, दक्षिण में बांसवाड़ा का बोरकुंड, पश्चिम में जैसलमेर का कटरा और पूर्व में धौलपुर का सिलाना।

क्षेत्रफल और सीमाएँ: 3,42,239 वर्ग किमी क्षेत्रफल के साथ, जो भारत के क्षेत्रफल का लगभग 10.41 प्रतिशत है, राजस्थान 1 नवंबर 2000 से सबसे बड़ा राज्य है, जब मध्य प्रदेश से अलग होकर छत्तीसगढ़ बना। इसकी कुल सीमा लगभग 5,920 किमी है। पाकिस्तान के साथ पश्चिमी सीमा, जो 1947 में खींची गई रेडक्लिफ रेखा का भाग है, 1,070 किमी लंबी है और श्रीगंगानगर के हिंदूमलकोट से बाड़मेर के बाखासर तक जाती है; इसका सबसे लंबा भाग जैसलमेर के साथ है। शेष 4,850 किमी सीमा पाँच राज्यों से लगती है: पंजाब (उत्तर), हरियाणा (उत्तर और उत्तर-पूर्व), उत्तर प्रदेश (पूर्व), मध्य प्रदेश (दक्षिण-पूर्व, सबसे लंबी अंतरराज्यीय सीमा) और गुजरात (दक्षिण-पश्चिम)। पंजाब के साथ सीमा सबसे छोटी है।

चार भौतिक प्रदेश: भूगोलवेत्ता राज्य को चार प्रदेशों में बाँटते हैं: उत्तर-पश्चिमी मरुस्थल, जो क्षेत्रफल का लगभग 61 प्रतिशत है; अरावली पर्वतीय प्रदेश, लगभग 9 प्रतिशत; पूर्वी मैदान, लगभग 23 प्रतिशत; और दक्षिण-पूर्वी हाड़ौती पठार, लगभग 7 प्रतिशत। दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर फैली अरावली श्रेणी मुख्य विभाजक है: इसके पश्चिम में भूमि शुष्क और रेतीली है, जबकि पूर्व में अधिक हरी-भरी और उपजाऊ।

थार मरुस्थल: थार या महान भारतीय मरुस्थल (मरुस्थली) पाकिस्तान तक फैला है, जहाँ इसका एक भाग चोलिस्तान कहलाता है, और यह विश्व के सबसे घनी आबादी वाले मरुस्थलों में से एक है। 25 सेमी समवर्षा रेखा (समान वर्षा वाले स्थानों को मिलाने वाली रेखा) इसे रेत के टीलों और चट्टानी क्षेत्रों वाले शुष्क पश्चिमी भाग और पूर्व की अर्द्ध-शुष्क पट्टी में बाँटती है, जिसमें घग्घर का मैदान, शेखावाटी क्षेत्र, नागौरी उच्चभूमि और लूनी बेसिन (गोड़वाड़) शामिल हैं। टीले बरखान (अर्द्धचंद्राकार), अनुदैर्ध्य और परवलयिक जैसे रूपों में मिलते हैं; जैसलमेर में खिसकने वाले टीलों को धरियन कहते हैं। वर्षा के बाद भरने वाले खारे गर्त, यानी प्लाया झीलें, रन या टाट कहलाती हैं। जैसलमेर में पोकरण से मोहनगढ़ तक फैली भूमिगत मीठे जल की पट्टी लाठी सीरीज़ में सेवण घास उगती है, जो गोडावण को आश्रय देती है।

अरावली पर्वतमाला: अरावली विश्व की सबसे प्राचीन वलित पर्वतमालाओं में से है, जो प्राक्-कैम्ब्रियन काल में बनी और अब घिसकर नीची पहाड़ियाँ रह गई है। यह गुजरात के पालनपुर से दिल्ली की रायसीना पहाड़ी तक लगभग 692 किमी लंबी है, जिसमें से लगभग 550 किमी, यानी लगभग 80 प्रतिशत, राजस्थान में है। यह श्रेणी दक्षिण-पश्चिम में सबसे ऊँची और उत्तर-पूर्व में सबसे नीची है। सिरोही में माउंट आबू पर स्थित गुरु शिखर (1,722 मीटर) सबसे ऊँची चोटी है, जिस पर दत्तात्रेय का मंदिर है; सेर (1,597 मीटर) दूसरी सबसे ऊँची चोटी है। गुरु शिखर के पास उड़िया पठार राज्य का सबसे ऊँचा पठार है, और भोराट पठार कुंभलगढ़ और गोगुंदा के बीच है। राज्य का एकमात्र पर्वतीय पर्यटन स्थल माउंट आबू ग्रेनाइट का एक खंड है, जहाँ नक्की झील, दिलवाड़ा मंदिर और अचलगढ़ हैं। अरावली एक जल-विभाजक है: इसके पूर्व की नदियाँ बंगाल की खाड़ी में और पश्चिम की नदियाँ अरब सागर में जाती हैं। इस श्रेणी के दर्रों को नाल कहते हैं, जैसे देसूरी की नाल।

पूर्वी मैदान और हाड़ौती: पूर्वी मैदान चंबल, बनास और माही नदियों द्वारा अपवाहित हैं। धौलपुर, करौली और सवाई माधोपुर में चंबल बेसिन गहरे बीहड़ों में कटा है, जो राज्य का सबसे गंभीर अवनालिका अपरदन है। बनास का मैदान मेवाड़ के बड़े भाग और जयपुर-टोंक क्षेत्र में फैला है। दक्षिण में माही बेसिन बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ के बीच छप्पन का मैदान बनाता है, और डूंगरपुर-बांसवाड़ा क्षेत्र वागड़ कहलाता है। कोटा, बूंदी, बारां और झालावाड़ का हाड़ौती पठार मालवा पठार का विस्तार है, जहाँ विंध्य बलुआ पत्थर के कगार, काली मिट्टी और चंबल, कालीसिंध तथा पार्वती नदियाँ हैं।

जनसंख्या (जनगणना 2011): 2011 में राजस्थान की जनसंख्या 6,85,48,437 थी, जो भारत की जनसंख्या का 5.66 प्रतिशत है; जनसंख्या घनत्व 200 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी, लिंगानुपात प्रति 1,000 पुरुषों पर 928 महिलाएँ और साक्षरता दर 66.1 प्रतिशत थी। मरुस्थल सबसे बड़ा प्रदेश होते हुए भी पूर्वी मैदानों की तुलना में बहुत कम घना बसा है।

उदाहरण

- विस्तार: 23°3' से 30°12' उत्तर और 69°30' से 78°17' पूर्व; उत्तर-दक्षिण 826 किमी और पूर्व-पश्चिम 869 किमी; विषमकोण चतुर्भुज (पतंग जैसी) आकृति।
- क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किमी (भारत का 10.41 प्रतिशत); 1 नवंबर 2000 से सबसे बड़ा राज्य।
- पाकिस्तान सीमा (रेडक्लिफ रेखा) 1,070 किमी, हिंदूमलकोट (श्रीगंगानगर) से बाखासर (बाड़मेर) तक; सबसे लंबा भाग जैसलमेर का।
- पड़ोसी राज्य: पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश (सबसे लंबी सीमा) और गुजरात; पंजाब के साथ सीमा सबसे छोटी।
- भौतिक प्रदेशों का हिस्सा: मरुस्थल लगभग 61 प्रतिशत, अरावली लगभग 9 प्रतिशत, पूर्वी मैदान लगभग 23 प्रतिशत, हाड़ौती पठार लगभग 7 प्रतिशत।
- अरावली: पालनपुर से दिल्ली तक लगभग 692 किमी, राजस्थान में लगभग 550 किमी; गुरु शिखर 1,722 मीटर, सेर 1,597 मीटर; उड़िया सबसे ऊँचा पठार।
- कर्क रेखा बांसवाड़ा से गुज़रती है; अंतिम बिंदु कोणा (उत्तर), बोरकुंड (दक्षिण), कटरा (पश्चिम), सिलाना (पूर्व)।
- लाठी सीरीज़: पोकरण से मोहनगढ़ (जैसलमेर) तक भूमिगत जल की पट्टी, जहाँ सेवण घास उगती है।
- जनगणना 2011: 6.85 करोड़ जनसंख्या, भारत का 5.66 प्रतिशत, घनत्व 200, लिंगानुपात 928, साक्षरता 66.1 प्रतिशत।

> **त्वरित दोहराव:** 23°3'-30°12' उत्तरी अक्षांश, 69°30'-78°17' पूर्वी देशांतर; उत्तर-दक्षिण 826 किमी, पूर्व-पश्चिम 869 किमी; क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किमी (10.41%), 2000 से सबसे बड़ा राज्य; पाकिस्तान सीमा 1,070 किमी (हिंदूमलकोट से बाखासर), सबसे लंबा भाग जैसलमेर में; सबसे लंबी अंतरराज्यीय सीमा मध्य प्रदेश, सबसे छोटी पंजाब; मरुस्थल 61%, अरावली 9%, मैदान 23%, हाड़ौती 7%; अरावली 692 किमी (राज्य में 550 किमी); गुरु शिखर 1,722 मीटर; लाठी सीरीज़; जनगणना 2011: घनत्व 200, लिंगानुपात 928।

राजस्थान की नदियाँ, झीलें और जल परियोजनाएँ

अपवाह तंत्र: अरावली राज्य को विभाजित करती है, इसलिए यहाँ की नदियाँ तीन तंत्रों में बँटती हैं। अरावली के पूर्व की नदियाँ, जैसे चंबल, बनास, कालीसिंध, पार्वती और बाणगंगा, यमुना और गंगा के माध्यम से बंगाल की खाड़ी में जाती हैं। पश्चिम और दक्षिण की नदियाँ, लूनी, माही, साबरमती और पश्चिमी बनास, अरब सागर तक पहुँचती हैं। उत्तर और पश्चिम के बड़े भाग में आंतरिक अपवाह है: घग्घर, कांतली, काकनी और मेंथा जैसी नदियाँ किसी समुद्र तक पहुँचे बिना रेत में या खारी झीलों में समाप्त हो जाती हैं।

चंबल: चंबल (प्राचीन चर्मण्वती) मध्य प्रदेश में महू के पास जानापाव पहाड़ी से निकलती है, चित्तौड़गढ़ के चौरासीगढ़ के पास राजस्थान में प्रवेश करती है, मध्य प्रदेश की सीमा के साथ-साथ कोटा से होकर उत्तर-पूर्व की ओर बहती है और उत्तर प्रदेश में यमुना से मिल जाती है। इसे प्रायः राजस्थान की एकमात्र बारहमासी नदी कहा जाता है। इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ बनास, कालीसिंध, पार्वती, बामनी और मेज हैं। राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में फैले राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य में इसका जल घड़ियालों और गांगेय डॉल्फ़िन को आश्रय देता है। राजस्थान और मध्य प्रदेश की संयुक्त चंबल घाटी परियोजना में लागत और लाभ बराबर-बराबर बाँटे जाते हैं; प्रवाह की दिशा में इसकी चार संरचनाएँ क्रम से हैं: गांधी सागर बाँध (मध्य प्रदेश), रावतभाटा में राणा प्रताप सागर बाँध, जवाहर सागर बाँध और कोटा बैराज।

बनास, माही और साबरमती: 'वन की आशा' कहलाने वाली बनास कुंभलगढ़ के पास खमनोर की पहाड़ियों से निकलती है और पूर्णतः राजस्थान में बहने वाली सबसे लंबी नदी है। बीगोद (भीलवाड़ा) में इससे बेड़च और मेनाली मिलती हैं, और सवाई माधोपुर के पास रामेश्वर में यह चंबल से मिलती है, जहाँ सीप नदी भी मिलकर त्रिवेणी बनाती है। टोंक में बनास पर बना बीसलपुर बाँध जयपुर, अजमेर और टोंक को पेयजल देता है। माही मध्य प्रदेश में विंध्याचल से निकलती है, बांसवाड़ा में राजस्थान में प्रवेश करती है, कर्क रेखा को दो बार काटती है और गुजरात से होकर खंभात की खाड़ी में गिरती है। एक बड़े मेले के स्थल बेणेश्वर (डूंगरपुर) में इससे सोम और जाखम मिलती हैं। बांसवाड़ा के पास जमनालाल बजाज के नाम पर बना माही बजाज सागर बाँध जलविद्युत बनाता है। साबरमती उदयपुर के दक्षिण-पश्चिम में अरावली की पहाड़ियों से निकलकर अहमदाबाद होते हुए गुजरात में बहती है।

लूनी और घग्घर: लूनी अजमेर के पास नाग पहाड़ से निकलती है, जहाँ इसे सागरमती कहते हैं, और गोविंदगढ़ में पुष्कर से आने वाली सरस्वती के मिलने के बाद इसका नाम लूनी हो जाता है। मरुस्थल में दक्षिण-पश्चिम की ओर बहते हुए यह खारी मिट्टी के कारण बालोतरा के बाद खारी हो जाती है और कच्छ के रन में

समाप्त होती है। इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ, जैसे जवाई, सुकड़ी और बांडी, बाईं ओर से मिलती हैं; जोजड़ी एकमात्र नदी है जो दाईं ओर से मिलती है। पाली में सुमेरपुर के पास जवाई बाँध पश्चिमी राजस्थान का सबसे बड़ा बाँध है। अनेक विद्वान जिसे वैदिक सरस्वती मानते हैं, वह घग्घर हिमाचल प्रदेश की शिवालिक पहाड़ियों से निकलती है, हनुमानगढ़ में राजस्थान में प्रवेश करती है और प्रायः वहीं सूख जाती है; बाढ़ के समय यह पाकिस्तान के फोर्ट अब्बास तक पहुँचती है, जहाँ इसे हकरा कहते हैं। यह राज्य में आंतरिक अपवाह की सबसे लंबी नदी है।

खारे पानी की झीलें: जयपुर के पश्चिम में फुलेरा के पास स्थित सांभर भारत की सबसे बड़ी अंतर्देशीय खारे पानी की झील है; इसमें मेंथा, रूपनगढ़, खारी और खंडेला धाराएँ गिरती हैं, और 1990 में इसे रामसर आर्द्रभूमि घोषित किया गया। डीडवाना में नमक और सोडियम सल्फेट बनता है। बालोतरा के पास पचपदरा सबसे शुद्ध नमक देता है, जिसमें लगभग 98 प्रतिशत सोडियम क्लोराइड होता है; खारवाल परिवार मोरली झाड़ी की टहनियों पर इसके रवे जमाते हैं। लूणकरणसर (बीकानेर), फलोदी और कुचामन अन्य खारी झीलें हैं।

मीठे पानी की झीलें: उदयपुर के दक्षिण-पूर्व में स्थित जयसमंद (ढेबर) झील महाराणा जयसिंह ने 1687-1691 में गोमती नदी पर बाँध बनाकर बनवाई; लंबे समय तक एशिया की सबसे बड़ी कृत्रिम झील रही इस झील में बाबा का मगरा और प्यारी जैसे टापू हैं। कांकरोली में राजसमंद झील महाराणा राजसिंह ने अकाल राहत कार्य के रूप में बनवाई; इसके तटबंध नौचौकी पर 25 शिलाओं पर उत्कीर्ण राजप्रशस्ति है, जिसे प्रायः भारत का सबसे बड़ा संस्कृत अभिलेख कहा जाता है और जिसकी रचना रणछोड़ भट्ट ने की। उदयपुर में पिछोला झील राणा लाखा के समय एक बंजारे ने बनवाई, जिसमें जग निवास (लेक पैलेस) और जग मंदिर टापू हैं, और महाराणा फतेह सिंह द्वारा पुनर्निर्मित फतेह सागर के टापू पर सौर वेधशाला है। माउंट आबू की नक्की झील, जिसे किंवदंती के अनुसार देवताओं ने अपने नाखूनों से खोदा, राज्य की सबसे ऊँची झील है। अजमेर की आनासागर झील चौहान शासक अर्णोराज ने बनवाई, और जहाँगीर तथा शाहजहाँ ने यहाँ उद्यान और संगमरमर की बारादरियाँ बनवाईं। पुष्कर ब्रह्मा मंदिर वाली पवित्र झील है।

नहरें और जल संचयन: बीकानेर के इंजीनियर कंवर सेन की योजना पर 1958 में राजस्थान नहर के रूप में शुरू हुई इंदिरा गांधी नहर (1984 में नाम बदला) पंजाब में सतलुज और ब्यास के संगम पर बने हरिके बैराज से पानी लेती है। 204 किमी लंबी फीडर नहर इसे हनुमानगढ़ के मसीतावाली हेड तक लाती है, और 445 किमी लंबी मुख्य नहर जैसलमेर के मोहनगढ़ तक जाती है, यानी कुल 649 किमी। इसने उत्तर-पश्चिम को हरा-भरा बनाया, पर जलभराव और लवणता (सेम) की समस्या भी पैदा की। इससे पुरानी गंगनहर, जिसे बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह ने हुसैनीवाला से सतलुज का पानी लाकर बनवाया, 1927 में शुरू हुई। पारंपरिक कुंड और टांके (ढके हुए हौज), आभानेरी की चाँद बावड़ी जैसी बावड़ियाँ, जोहड़ और जैसलमेर की खड़ीन ने सूखे वर्षों में लोगों को जीवित रहने में मदद की।

उदाहरण

- चंबल: जानापाव (महू, मध्य प्रदेश के पास) से उद्गम, प्रायः राजस्थान की एकमात्र बारहमासी नदी कही जाती है, यमुना में मिलती है; बाँध क्रम से गांधी सागर, राणा प्रताप सागर, जवाहर सागर, कोटा बैराज।
- बनास: 'वन की आशा', पूर्णतः राजस्थान में बहने वाली सबसे लंबी नदी; बीगोद (बनास-बेड़च-मेनाली) और रामेश्वर (बनास-चंबल-सीप) में त्रिवेणी; बीसलपुर बाँध।
- माही: बांसवाड़ा में प्रवेश, कर्क रेखा को दो बार काटती है; बेणेश्वर त्रिवेणी (माही-सोम-जाखम); माही बजाज सागर बाँध।
- लूनी: अजमेर के पास नाग पहाड़ से सागरमती के रूप में उद्गम, बालोतरा के बाद खारी, कच्छ के रन में समाप्त; जोजड़ी इसकी एकमात्र दाईं ओर की सहायक नदी।
- घग्घर: अनेक विद्वानों द्वारा सरस्वती मानी जाती है, राज्य में आंतरिक अपवाह की सबसे लंबी नदी, पाकिस्तान में हकरा कहलाती है।
- खारी झीलें: सांभर (सबसे बड़ी अंतर्देशीय खारी झील, रामसर 1990), डीडवाना (सोडियम सल्फेट), पचपदरा (सबसे शुद्ध नमक, खारवाल परिवार, मोरली की टहनियाँ)।
- जयसमंद (ढेबर, गोमती नदी पर, महाराणा जयसिंह, 1687-1691); राजसमंद (राजसिंह, 25 शिलाओं पर राजप्रशस्ति)।
- पिछोला (बंजारे द्वारा, राणा लाखा के समय; जग निवास और जग मंदिर); फतेह सागर (सौर वेधशाला); नक्की (सबसे ऊँची झील); आनासागर (अर्णोराज)।
- इंदिरा गांधी नहर: हरिके बैराज, 1958 में आरंभ, 1984 में नाम बदला; 204 किमी फीडर + 445 किमी मुख्य नहर = 649 किमी, मोहनगढ़ पर समाप्त।
- गंगनहर (1927): बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह; आभानेरी (दौसा) में चाँद बावड़ी।

> **त्वरित दोहराव:** अरावली से बंगाल की खाड़ी, अरब सागर और आंतरिक अपवाह का विभाजन; चंबल प्रायः एकमात्र बारहमासी नदी कही जाती है, गांधी सागर-राणा प्रताप सागर-जवाहर सागर-कोटा बैराज; बनास पूर्णतः राज्य में बहने वाली सबसे लंबी नदी, बीसलपुर बाँध; माही कर्क रेखा को दो बार काटती है, बेणेश्वर; लूनी बालोतरा के बाद खारी, जोजड़ी एकमात्र दाईं सहायक नदी; घग्घर = हकरा; सांभर सबसे बड़ी अंतर्देशीय खारी झील (रामसर 1990); जयसमंद, राजसमंद (राजप्रशस्ति); इंदिरा गांधी नहर हरिके से, 649 किमी।

राजस्थान की जलवायु, मिट्टियाँ, वन और वन्यजीव

जलवायु का प्रकार: राजस्थान के अधिकांश भाग की जलवायु शुष्क उष्णकटिबंधीय है, जो पश्चिम में शुष्क और मध्य में अर्द्ध-शुष्क है, तथा दक्षिण-पूर्व में उप-आर्द्र और माउंट आबू तथा सुदूर दक्षिण में आर्द्र हो जाती है। ग्रीष्म ऋतु बहुत तीखी होती है: 19 मई 2016 को फलोदी में 51 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज हुआ, जिससे भारत में अधिकतम तापमान का नया सर्वकालिक रिकॉर्ड बना। मई और जून में लू कहलाने वाली गर्म, शुष्क हवाएँ चलती हैं, और उत्तर-पश्चिम में आँधियाँ आम हैं। शीत ऋतु ठंडी और शुष्क होती है, उत्तर में पाला पड़ता है; पश्चिमी विक्षोभों से होने वाली हल्की शीतकालीन वर्षा मावठ कहलाती है, जो रबी फसलों के लिए उपयोगी है।

वर्षा का क्रम: वर्षा मुख्यतः जून के अंत से सितंबर तक दक्षिण-पश्चिम मानसून से होती है। अरब सागर की शाखा अरावली के समानांतर चलती है और पश्चिम में बहुत कम वर्षा करती है, जबकि पूर्व से आने वाली बंगाल की खाड़ी की शाखा राज्य की अधिकांश वर्षा देती है। इसलिए वर्षा दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर घटती जाती है: झालावाड़ और बांसवाड़ा जैसे दक्षिणी और दक्षिण-पूर्वी भाग सबसे अधिक वर्षा वाले हैं, माउंट आबू में राज्य के किसी भी अन्य स्थान से

अधिक वर्षा होती है, और जैसलमेर सबसे शुष्क ज़िला है। 50 सेमी समवर्षा रेखा लगभग अरावली के साथ-साथ चलती है, और 25 सेमी समवर्षा रेखा शुष्क पश्चिम को अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र से अलग करती है। वर्षा में वर्ष-दर-वर्ष भारी उतार-चढ़ाव भी होता है, इसीलिए मरुस्थल में सूखा और अकाल बार-बार पड़ते हैं।

मिट्टियाँ: पश्चिमी राजस्थान में रेतीली मरुस्थलीय मिट्टियाँ (एरिडीसोल और एंटीसोल) हैं, जिनमें नाइट्रोजन और जैविक पदार्थ कम होते हैं और पानी जल्दी रिस जाता है; ये बाजरा, मोठ और ग्वार के लिए उपयुक्त हैं। पूर्व में बनास और चंबल के मैदानों में उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी (गेहूँ और सरसों) है, दक्षिण में मक्का के लिए अच्छी लाल दोमट मिट्टी है, और हाड़ौती पठार में सोयाबीन और कपास के लिए उपयुक्त काली मिट्टी है। क्षारीय और लवणीय मिट्टियों का उपचार जिप्सम से किया जाता है। मरुस्थल में मुख्य समस्या वायु अपरदन है, चंबल के बीहड़ों में अवनालिका अपरदन, और इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र में जलभराव (सेम)। 1959 में जोधपुर में स्थापित केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी) मरुस्थलीय भूमि उपयोग और खिसकती रेत को स्थिर करने पर शोध करता है।

राज्य के वन: राज्य के बहुत छोटे भाग पर ही वन हैं। पश्चिम में खेजड़ी, बबूल, रोहिड़ा, कैर और फोग के उष्णकटिबंधीय काँटेदार वन हैं; अरावली और पूर्व में उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन हैं, जिनमें धोकड़ा (एनोजीसस पेंडुला) सबसे आम वृक्ष है; दक्षिण में बांसवाड़ा, डूंगरपुर और उदयपुर के आसपास सागवान के वन हैं; दक्षिण और दक्षिण-पूर्व में बाँस उगता है; और उपोष्णकटिबंधीय सदाबहार वन का छोटा-सा भाग केवल माउंट आबू पर बचा है। मरुस्थल के चरागाहों में सेवण और धामण घास उगती है। गाँव की परंपरा से संरक्षित पवित्र उपवन, जिन्हें ओरण कहते हैं, सामुदायिक संरक्षण का पुराना रूप हैं।

बाघ अभयारण्य और राष्ट्रीय उद्यान: सवाई माधोपुर का रणथंभौर, जो 1973 में बाघ परियोजना (प्रोजेक्ट टाइगर) के पहले अभयारण्यों में से था, 1980 में राष्ट्रीय उद्यान बना और अपने दुर्ग के खंडहरों के बीच दिखने वाले बाघों के लिए प्रसिद्ध है। अलवर का सरिस्का 1978 में बाघ अभयारण्य बना; अवैध शिकार से वहाँ के बाघ समाप्त हो जाने के बाद 2008 में रणथंभौर से बाघ वहाँ लाए गए, जो भारत में बाघों का ऐसा पहला स्थानांतरण था। कोटा के आसपास का मुकुंदरा हिल्स 2013 में बाघ अभयारण्य घोषित हुआ। भरतपुर का केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, जो कभी भरतपुर के शासकों का बत्तख-शिकार क्षेत्र था, 1981 में रामसर स्थल घोषित हुआ, बाद में राष्ट्रीय उद्यान बना और 1985 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में अंकित हुआ; यह साइबेरियन सारस का शीतकालीन प्रवास स्थल था। जैसलमेर और बाड़मेर में फैला मरु राष्ट्रीय उद्यान (लगभग 3,162 वर्ग किमी) गंभीर रूप से संकटग्रस्त पक्षी गोडावण की रक्षा करता है, और इसमें आकल वुड फॉसिल पार्क है, जहाँ लगभग 18 करोड़ (180 मिलियन) वर्ष पुराने वृक्षों के जीवाश्म हैं।

अन्य अभयारण्य: चूरू का ताल छापर काले हिरण और प्रवासी शिकारी पक्षियों के लिए, प्रतापगढ़ का सीतामाता उड़न गिलहरी के लिए, कुंभलगढ़ भेड़ियों के लिए, राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य घड़ियालों के लिए, माउंट आबू अभयारण्य अपनी पर्वतीय वनस्पति के लिए, और जयसमंद तथा दर्रा वन्य जीवों के लिए जाने जाते हैं। फलोदी के पास खीचन में ग्रामीण हर सर्दी में हज़ारों कुरजां (डेमोइसेल क्रेन) को दाना खिलाते हैं। बिश्नोई गाँवों के पास चिंकारा और काले हिरण अच्छी संख्या में बचे हैं, क्योंकि यह समुदाय उनकी रक्षा करता है।

बिश्नोई परंपरा और खेजड़ली: गुरु जंभेश्वर (जांभोजी) ने 1485 में बीकानेर के पास समराथल में बिश्नोई संप्रदाय की स्थापना की और 29 नियम (बीस-नौ, यानी उनतीस) दिए, जिनमें पेड़ों और जीवों की रक्षा शामिल है; नोखा के पास मुकाम में उनकी समाधि इस संप्रदाय का प्रमुख तीर्थ है। 1730 में जोधपुर के महाराजा अभय सिंह के भेजे लोग चूने के भट्टों के लिए खेजड़ी के पेड़ काटने जोधपुर के पास खेजड़ली गाँव पहुँचे। अमृता देवी बिश्नोई पेड़ से लिपट गईं और मारी गईं, और कटाई रुकने तक उनके सहित कुल 363 बिश्नोई पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों ने अपने प्राण दे दिए। इसके बाद शासक ने बिश्नोई गाँवों में पेड़ काटने और शिकार पर रोक लगा दी। खेजड़ली को चिपको आंदोलन का अग्रदूत माना जाता है, और वन्यजीव संरक्षण का एक राष्ट्रीय पुरस्कार अमृता देवी के नाम पर है।

उदाहरण

- फलोदी, 19 मई 2016: 51 डिग्री सेल्सियस, भारत में अधिकतम तापमान का नया सर्वकालिक रिकॉर्ड।
- वर्षा दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर घटती है; माउंट आबू सबसे अधिक वर्षा वाला स्थान, जैसलमेर सबसे शुष्क ज़िला; पश्चिमी विक्षोभ से होने वाली शीतकालीन वर्षा मावठ कहलाती है।
- 25 सेमी समवर्षा रेखा शुष्क को अर्द्ध-शुष्क से अलग करती है; 50 सेमी समवर्षा रेखा लगभग अरावली के साथ चलती है।
- मिट्टियाँ: पश्चिम में रेतीली मरुस्थलीय, पूर्व में जलोढ़, दक्षिण में लाल दोमट, हाड़ौती में काली; नहर क्षेत्र का जलभराव सेम कहलाता है।
- धोकड़ा सबसे आम वन वृक्ष है; सागवान दक्षिण में उगता है; उपोष्णकटिबंधीय सदाबहार वन केवल माउंट आबू पर मिलता है।
- रणथंभौर: बाघ परियोजना 1973, राष्ट्रीय उद्यान 1980; सरिस्का: बाघ अभयारण्य 1978, 2008 में बाघों का स्थानांतरण; मुकुंदरा हिल्स: बाघ अभयारण्य 2013।
- केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (भरतपुर): रामसर स्थल 1981, यूनेस्को विश्व धरोहर 1985; पहले साइबेरियन सारस का शीतकालीन प्रवास स्थल।
- मरु राष्ट्रीय उद्यान (जैसलमेर-बाड़मेर, लगभग 3,162 वर्ग किमी): गोडावण और आकल वुड फॉसिल पार्क।
- ताल छापर: काला हिरण; सीतामाता: उड़न गिलहरी; खीचन: कुरजां (डेमोइसेल क्रेन); काजरी (CAZRI) जोधपुर (1959)।
- खेजड़ली 1730: खेजड़ी के पेड़ों की रक्षा में अमृता देवी के नेतृत्व में 363 बिश्नोई शहीद हुए; जांभोजी ने 1485 में 29 नियमों के साथ बिश्नोई संप्रदाय की स्थापना की।

> **त्वरित दोहराव:** पश्चिम शुष्क, मध्य अर्द्ध-शुष्क, दक्षिण-पूर्व उप-आर्द्र; फलोदी 51°C, 19 मई 2016; लू, आँधी, मावठ; वर्षा दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर घटती है, माउंट आबू सर्वाधिक, जैसलमेर सबसे शुष्क; 25 सेमी और 50 सेमी समवर्षा रेखाएँ; रेतीली, जलोढ़, लाल और काली मिट्टियाँ, सेम; धोकड़ा सबसे आम वृक्ष; रणथंभौर 1973, सरिस्का 2008 स्थानांतरण, मुकुंदरा 2013; केवलादेव यूनेस्को 1985; मरु राष्ट्रीय उद्यान में गोडावण, आकल जीवाश्म; खेजड़ली 1730, 363 बिश्नोई, जांभोजी 1485।

राजस्थान की कृषि, खनिज और उद्योग

शुष्क भूमि में खेती: राजस्थान की अधिकांश खेती वर्षा पर निर्भर है, इसलिए फसलें सूखा सहने की क्षमता के आधार पर चुनी जाती हैं। जून-जुलाई में मानसून के साथ बोई जाने वाली खरीफ फसलों में बाजरा, ज्वार, मक्का, मूंग, मोठ, ग्वार, मूँगफली, तिल, कपास और सोयाबीन हैं; अक्टूबर-नवंबर में बोई जाने वाली रबी फसलों में गेहूँ, जौ, सरसों, चना, जीरा, धनिया और ईसबगोल हैं। कुओं और नलकूपों, उत्तर-पश्चिम में इंदिरा गांधी नहर और गंगनहर तथा हाड़ौती में चंबल की नहरों से होने वाली सिंचाई तय करती है कि गेहूँ और कपास कहाँ उग सकते हैं। नहरों से सिंचित श्रीगंगानगर राजस्थान का अन्न भंडार (अन्न का कटोरा) कहलाता है।

जिन फसलों में राजस्थान आगे है: दशकों से राजस्थान बाजरा, राई-सरसों, ग्वार और मोठ का भारत में सबसे बड़ा उत्पादक रहा है, और ईसबगोल, धनिया, जीरा, मेथी तथा चने का भी प्रमुख उत्पादक है। बाजरा मरुस्थल का मुख्य अनाज है। भरतपुर में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) का राई-सरसों अनुसंधान निदेशालय है। ग्वार के बीज से ग्वार गम बनता है, जो खाद्य प्रसंस्करण और तेल की खुदाई में काम आता है, और इसका बड़ा भाग जोधपुर में संसाधित होता है। धनिया हाड़ौती में केंद्रित है, जहाँ कोटा की रामगंजमंडी इसकी प्रमुख मंडी है, और नागौर मेथी के लिए प्रसिद्ध है।

पशुधन: मरुस्थल में पशु भी फसलों जितने ही महत्वपूर्ण हैं। भारत में सबसे अधिक ऊँट राजस्थान में हैं, और यह देश का एक प्रमुख ऊन उत्पादक है। प्रसिद्ध नस्लों में राठी गाय, जिसे राजस्थान की कामधेनु कहते हैं, थारपारकर और कांकरेज मवेशी तथा नागौरी बैल; 'भारत की मेरिनो' कहलाने वाली चोकला भेड़ और मारवाड़ी तथा मगरा भेड़; जमनापरी, बरबरी और मारवाड़ी बकरियाँ; तथा बीकानेरी और जैसलमेरी ऊँट शामिल हैं। राष्ट्रीय ऊष्ट्र अनुसंधान केंद्र बीकानेर में और केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर (टोंक) में है।

खनिजों का अजायबघर: राजस्थान की प्राचीन चट्टानों के कारण यह खनिजों में इतना समृद्ध है कि इसे खनिजों का अजायबघर कहा जाता है। सीसा और जस्ता उदयपुर के दक्षिण में स्थित जावर में निकाला जाता है, जो विश्व के सबसे पुराने जस्ता-प्रगलन स्थलों में से एक है, और भीलवाड़ा के रामपुरा आगूचा में, जो विश्व की सबसे बड़ी जस्ता-सीसा खानों में से एक है; उप-उत्पाद के रूप में चाँदी प्राप्त होती है, और जस्ता प्रगलक देबारी (उदयपुर) तथा चंदेरिया (चित्तौड़गढ़) में हैं। ताँबा शेखावाटी क्षेत्र की खेतड़ी पट्टी से आता है, जहाँ 1967 में स्थापित हिंदुस्तान कॉपर का संयंत्र है, और टंगस्टन नागौर क्षेत्र के डेगाना से। सीसा-जस्ता, चाँदी, वोलेस्टोनाइट, जिप्सम, रॉक फॉस्फेट, कैल्साइट और जैस्पर के उत्पादन में राजस्थान भारत में अग्रणी या एकमात्र उत्पादक है।

अधात्विक खनिज और इमारती पत्थर: रॉक फॉस्फेट उदयपुर के पास झामरकोटड़ा में, वोलेस्टोनाइट सिरोही और डूंगरपुर में, और जिप्सम बीकानेर, नागौर, बाड़मेर तथा जैसलमेर में निकाला जाता है; जिप्सम सीमेंट में काम आता है और क्षारीय मिट्टियों के सुधार में प्रयुक्त होता है। लिग्नाइट पलाना (बीकानेर) और गिरल तथा कपूरड़ी (बाड़मेर) से आता है। इमारती पत्थर यहाँ की विशेषता है: मकराना के सफ़ेद संगमरमर का उपयोग ताजमहल और विक्टोरिया मेमोरियल में हुआ, धौलपुर और करौली का लाल और गुलाबी बलुआ पत्थर नई दिल्ली की अनेक सरकारी इमारतों में लगा, कोटा स्टोन (एक प्रकार का चूना पत्थर) फ़र्श में प्रयुक्त होता है, और जैसलमेर पीला पत्थर देता है।

ऊर्जा: बाड़मेर बेसिन के मंगला क्षेत्र में 2004 में तेल मिला और 2009 में उत्पादन शुरू हुआ; जैसलमेर में प्राकृतिक गैस भी है। कनाडा की सहायता से बना रावतभाटा (चित्तौड़गढ़) का राजस्थान परमाणु बिजलीघर 1973 में चालू हुआ। ताप बिजलीघर कोटा, सूरतगढ़ और छबड़ा में हैं। भारत की सबसे तेज़ धूप वाले क्षेत्रों में होने और विशाल खुली भूमि के कारण राजस्थान सौर ऊर्जा का प्रमुख केंद्र है, और फलोदी के पास भड़ला सोलर पार्क विश्व के सबसे बड़े सौर पार्कों में से एक है। पवन ऊर्जा संयंत्र जैसलमेर और बाड़मेर में हैं।

उद्योग और हस्तशिल्प: राजस्थान की पहली आधुनिक सूती मिल, कृष्णा मिल्स, 1889 में ब्यावर में खुली, और पहला सीमेंट कारखाना 1915 में लाखेरी (बूंदी) में। अनेक कपड़ा मिलों वाला भीलवाड़ा राजस्थान का मैनचेस्टर कहलाता है। राज्य अपने हस्तशिल्प के लिए भी उतना ही प्रसिद्ध है: जयपुर की ब्लू पॉटरी, जो मिट्टी के बजाय क्वार्ट्ज़ से बनती है और फ़ारसी मूल की है; सांगानेर (सफ़ेद पृष्ठभूमि पर बारीक फूल-पत्तियाँ) और बगरू (प्राकृतिक रंगों से दाबू यानी मिट्टी-प्रतिरोधी छपाई) की हाथ-ठप्पा छपाई; जोधपुर और जयपुर का बंधेज (बाँधकर रंगाई) और इसका लहरदार रूप लहरिया, जो तीज पर पहना जाता है; कैथून का हल्का, चौखानेदार सूती-रेशमी कपड़ा कोटा डोरिया; प्रतापगढ़ की थेवा कला, जिसमें काँच पर सोने का काम जड़ा जाता है; नाथद्वारा के पास मोलेला की देव-प्रतिमाओं वाली टेराकोटा पट्टिकाएँ; और बीकानेर की उस्ता कला, जिसमें ऊँट की खाल पर सोने का उभरा काम होता है। इनमें से कई, जैसे कोटा डोरिया, जयपुर की ब्लू पॉटरी और सांगानेर तथा बगरू की छपाई, को GI टैग मिला है।

उदाहरण

- राजस्थान लंबे समय से बाजरा, राई-सरसों, ग्वार और मोठ में भारत में अग्रणी है; श्रीगंगानगर राज्य का अन्न भंडार है।
- खरीफ: बाजरा, ज्वार, मक्का, मूंग, मोठ, ग्वार, मूँगफली; रबी: गेहूँ, जौ, सरसों, चना, जीरा, ईसबगोल।
- सबसे अधिक ऊँट और एक प्रमुख ऊन उत्पादक; राठी गाय = राजस्थान की कामधेनु; चोकला भेड़ = भारत की मेरिनो; ऊष्ट्र अनुसंधान केंद्र बीकानेर में।
- जस्ता-सीसा: जावर (उदयपुर के पास) और रामपुरा आगूचा (भीलवाड़ा); ताँबा: खेतड़ी (शेखावाटी); टंगस्टन: डेगाना।
- रॉक फॉस्फेट: झामरकोटड़ा; वोलेस्टोनाइट: सिरोही और डूंगरपुर; जिप्सम: बीकानेर, नागौर, बाड़मेर; लिग्नाइट: पलाना और गिरल।
- मकराना का सफ़ेद संगमरमर: ताजमहल और विक्टोरिया मेमोरियल; कोटा स्टोन फ़र्श के लिए; धौलपुर का बलुआ पत्थर इमारतों के लिए।
- बाड़मेर का तेल: मंगला क्षेत्र 2004 में मिला, 2009 से उत्पादन; रावतभाटा परमाणु संयंत्र 1973 से; फलोदी के पास भड़ला सोलर पार्क।
- पहली सूती मिल: कृष्णा मिल्स, ब्यावर, 1889; पहला सीमेंट कारखाना: लाखेरी, 1915; भीलवाड़ा राजस्थान का मैनचेस्टर है।
- हस्तशिल्प और स्थान: ब्लू पॉटरी (जयपुर), सांगानेरी और बगरू छपाई, कोटा डोरिया (कैथून), थेवा (प्रतापगढ़), मोलेला टेराकोटा, उस्ता कला (बीकानेर)।

त्वरित दोहराव: वर्षा-आधारित खेती; बाजरा, सरसों, ग्वार, मोठ में अग्रणी; गंगानगर अन्न भंडार; सबसे अधिक ऊँट, प्रमुख ऊन उत्पादक; राठी, थारपारकर, चोकला नस्लें; खनिजों का अजायबघर: जावर और रामपुरा आगूचा जस्ता-सीसा, खेतड़ी ताँबा, डेगाना टंगस्टन, झामरकोटड़ा रॉक फॉस्फेट, जिप्सम, वोलेस्टोनाइट, मकराना संगमरमर; बाड़मेर तेल 2004/2009; रावतभाटा 1973; भड़ला सौर पार्क; कृष्णा मिल्स ब्यावर 1889; लाखेरी सीमेंट 1915; ब्लू पॉटरी, सांगानेर, बगरू, थेवा, कोटा डोरिया।

राजस्थान की कला और संस्कृति: लोक नृत्य, लोक देवता, मेले, चित्रकला और बोलियाँ

लोक नृत्य: घेरदार घाघरा पहनकर स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला सुंदर घूमता हुआ नृत्य घूमर भीलों में शुरू हुआ, राजघरानों ने इसे अपनाया, और यह गणगौर तथा तीज पर किया जाता है; यह राज्य नृत्य है। सपेरा कालबेलिया समुदाय की स्त्रियाँ काले घाघरे पहनकर बीन और खंजरी की धुन पर कालबेलिया नृत्य करती हैं; 2010 में इसे यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल किया गया, और गुलाबो सपेरा ने इसे प्रसिद्ध बनाया। चरी नृत्य में किशनगढ़ की गुर्जर स्त्रियाँ सिर पर जलते दीपों वाले पीतल के घड़े (चरी) संतुलित करती हैं। शेखावाटी का कच्छी घोड़ी नृत्य पुरुष नकली घोड़ों पर सवार होकर करते हैं। तेरहताली नृत्य रामदेवजी की भक्त कामड़ समुदाय की स्त्रियाँ शरीर पर 13 मंजीरे बाँधकर करती हैं। गैर होली पर मेवाड़ और मारवाड़ में भीलों तथा अन्य लोगों द्वारा डंडों के साथ किया जाने वाला पुरुषों का नृत्य है। अन्य नृत्यों में भवाई, कतरियासर का जसनाथी अग्नि नृत्य और हाड़ौती की कंजर स्त्रियों का चकरी नृत्य शामिल हैं।

लोक देवता: राजस्थान के लोक देवता अधिकतर ऐसे वीर थे जिन्होंने गायों, निर्बलों या अपने वचन की रक्षा में प्राण दिए। फलोदी के पास कोलू के पाबूजी राठौड़ को मारवाड़ में ऊँट लाने का श्रेय दिया जाता है और ऊँटों के रक्षक देवता के रूप में उनकी पूजा होती है। खड़नाल (नागौर) के जाट तेजाजी ने एक सर्प को दिया वचन निभाते हुए सर्पदंश से प्राण दिए और सर्प देवता के रूप में पूजे जाते हैं; परबतसर में उनके नाम पर बड़ा पशु मेला लगता है, और भाद्रपद शुक्ल दशमी तेजा दशमी के रूप में मनाई जाती है। रामदेवजी तंवर राजपूत थे, जिनकी समाधि पोकरण के पास रामदेवरा (रुणिचा) में है; हिंदू उन्हें अवतार और मुसलमान रामसा पीर मानते हैं, इसलिए उनका मेला सांप्रदायिक सद्भाव का प्रतीक है। ददरेवा (चूरू) में जन्मे गोगाजी चौहान की सर्प देवता के रूप में गोगामेड़ी (हनुमानगढ़) में पूजा होती है। पाबूजी, रामदेवजी, गोगाजी, हड़बूजी और मेहाजी पाँच पीर हैं। बीकानेर के राठौड़ों की कुलदेवी, देशनोक (बीकानेर) की करणी माता का मंदिर अपने चूहों (काबा) के लिए प्रसिद्ध है, और आसींद में गुर्जरों द्वारा पूजे जाने वाले देवनारायण की फड़ सबसे लंबी है।

मेले और त्योहार: पवित्र सरोवर पर लगने वाला और कार्तिक पूर्णिमा को समाप्त होने वाला पुष्कर मेला ऊँटों और पशुओं का सबसे प्रसिद्ध मेला है। तीज (श्रावण शुक्ल तृतीया) वर्षा ऋतु और शिव-पार्वती के मिलन का उत्सव है; जयपुर की तीज की सवारी और बूंदी की कजली तीज प्रसिद्ध हैं, और स्त्रियाँ लहरिया पहनती हैं। गौरी (पार्वती) का पर्व गणगौर होली के अगले दिन से लगभग 18 दिन चलता है और चैत्र शुक्ल तृतीया को समाप्त होता है, जिसमें जयपुर और उदयपुर में सवारी निकलती है; जैसलमेर में गौरी की सवारी बिना ईसर (शिव) के निकलती है। माघ में होने वाला और माघ पूर्णिमा को समाप्त होने वाला जैसलमेर का मरु महोत्सव सम के धोरों पर ऊँटों से जुड़े आयोजनों के लिए प्रसिद्ध है। माही, सोम और जाखम के संगम पर माघ पूर्णिमा को लगने वाला बेणेश्वर (डूंगरपुर) मेला आदिवासियों का कुंभ कहलाता है; अन्य प्रसिद्ध मेले हैं कार्तिक पूर्णिमा पर कोलायत (बीकानेर), नागौर का पशु मेला और अजमेर का उर्स।

चित्रकला शैलियाँ: आनंद कुमारस्वामी ने 1916 में पहली बार राजपूत चित्रकला को एक अलग परंपरा के रूप में प्रस्तुत किया। राजस्थानी चित्रकला के चार मुख्य स्कूल हैं। मेवाड़ शैली सबसे पुरानी है: आहड़ में चित्रित 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि' (1260) इसका सबसे पुराना तिथियुक्त उदाहरण है, और जगतसिंह प्रथम के समय साहिबदीन की 'रागमाला' (1628) इसके स्वर्णकाल की पहचान है; नाथद्वारा इसकी उपशैली है, जो श्रीनाथजी की प्रतिमा के पीछे लगाए जाने वाले कपड़े पर बने पिछवाई चित्रों के लिए प्रसिद्ध है। मारवाड़ स्कूल में जोधपुर, बीकानेर और किशनगढ़ शैलियाँ आती हैं; किशनगढ़ में 18वीं शताब्दी में राजा सावंत सिंह (कवि नागरीदास) के समय निहालचंद ने 'बणी-ठणी' चित्रित की, जिसे एरिक डिकिन्सन ने भारत की मोनालिसा कहा, और 1973 में इस पर डाक टिकट जारी हुआ। ढूँढाड़ स्कूल में आमेर, जयपुर, अलवर और हवेलियों पर बने शेखावाटी के भित्तिचित्र आते हैं, जिन्हें खुली कला दीर्घा कहा जाता है। हाड़ौती स्कूल में अपनी चित्रशाला और प्रकृति के सघन दृश्यों के लिए प्रसिद्ध बूंदी शैली और शिकार के दृश्यों के लिए प्रसिद्ध कोटा शैली आती हैं।

फड़ और अन्य लोक कला: फड़ किसी लोक देवता के जीवन का कपड़े पर बना लंबा कुंडलित चित्र है, जिसे भीलवाड़ा के पास शाहपुरा के जोशी परिवार बनाते हैं और भोपे रात में कथा गाते हुए खोलते हैं; पाबूजी की फड़ रावणहत्था के साथ और देवनारायण की फड़ जंतर के साथ बाँची जाती है। बस्सी (चित्तौड़गढ़) की कावड़ मुड़ने वाले पटलों वाला रंगीन लकड़ी का मंदिर है, जिसका उपयोग कथावाचक करते हैं, और मांडणा त्योहारों पर स्त्रियों द्वारा फ़र्श पर बनाई जाने वाली कला है।

भाषा और बोलियाँ: देवनागरी में लिखी जाने वाली राजस्थानी की कई बोलियाँ हैं। सबसे अधिक बोली जाने वाली मारवाड़ी जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर और बाड़मेर की भाषा है; इसका प्राचीन साहित्यिक रूप डिंगल है, जो चारणों की वीर रस प्रधान कविता है, जबकि पिंगल भाटों की ब्रजभाषा से प्रभावित साहित्यिक शैली है। मेवाड़ी उदयपुर, चित्तौड़गढ़ और भीलवाड़ा के आसपास; ढूँढाड़ी (जयपुरी) जयपुर के आसपास; हाड़ौती कोटा, बूंदी, बारां और झालावाड़ में; मेवाती अलवर और भरतपुर में; और गुजराती प्रभाव वाली भीली बोली वागड़ी डूंगरपुर और बांसवाड़ा में बोली जाती है। प्रमुख कृतियों में चंदबरदाई का 'पृथ्वीराज रासो', सूर्यमल्ल मिश्रण का 'वंश भास्कर' और मुहणोत नैणसी की 'ख्यात' हैं; नैणसी को राजपूताने का अबुल फ़ज़ल कहा जाता है।

संत: मेड़ता के राठौड़ परिवार में मेड़ता के पास कुड़की गाँव में जन्मी मीराबाई का विवाह राणा सांगा के पुत्र भोजराज से हुआ; उन्होंने राजसी जीवन छोड़कर कृष्ण भक्ति अपनाई, और उनके पद पूरे भारत में गाए जाते हैं। राजस्थान के कबीर कहलाने वाले दादू दयाल (1544-1603) ने जाति और कर्मकांड के विरुद्ध निर्गुण भक्ति का उपदेश दिया और दादू पंथ की स्थापना की, जिसकी प्रमुख पीठ जयपुर के पास नरैना में है। अन्य संतों में जांभोजी, जसनाथजी, गागरोन के पीपा, रामस्नेही संप्रदाय के रामचरण और चरणदासी संप्रदाय के संस्थापक चरणदास शामिल हैं।

उदाहरण

- घूमर: राज्य नृत्य, भील मूल का स्त्रियों का घूमता नृत्य; कालबेलिया: सपेरा समुदाय का नृत्य, यूनेस्को अमूर्त विरासत 2010।
- चरी: किशनगढ़ की गुर्जर स्त्रियाँ, जलते दीपों वाले घड़े; तेरहताली: कामड़ स्त्रियाँ, 13 मंजीरे, रामदेवजी की भक्ति; कच्छी घोड़ी: शेखावाटी।
- लोक देवता और स्थान: पाबूजी (कोलू, ऊँट), तेजाजी (खड़नाल, सर्प), रामदेवजी (रामदेवरा), गोगाजी (गोगामेड़ी), करणी माता (देशनोक, चूहे), देवनारायण (आसींद)।
- राजस्थान के पाँच पीर: पाबूजी, रामदेवजी, गोगाजी, हड़बूजी और मेहाजी।
- गणगौर चैत्र शुक्ल तृतीया को समाप्त होती है; तीज श्रावण शुक्ल तृतीया को; पुष्कर और कोलायत मेले कार्तिक पूर्णिमा को; बेणेश्वर माघ पूर्णिमा को।
- मेवाड़ का सबसे पुराना तिथियुक्त चित्र: श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि (1260); जगतसिंह प्रथम के समय साहिबदीन की रागमाला 1628।
- बणी-ठणी: किशनगढ़ शैली, सावंत सिंह (नागरीदास) के समय निहालचंद द्वारा चित्रित; एरिक डिकिन्सन ने इसे भारत की मोनालिसा कहा।
- फड़: शाहपुरा के जोशी परिवारों का कुंडलित चित्र; पिछवाई: नाथद्वारा; कावड़: बस्सी।
- बोलियाँ: मारवाड़ी (पश्चिम), मेवाड़ी (उदयपुर), ढूँढाड़ी (जयपुर), हाड़ौती (कोटा-बूंदी), मेवाती (अलवर-भरतपुर), वागड़ी (डूंगरपुर-बांसवाड़ा)।
- मीराबाई: कुड़की (मेड़ता) में जन्म, भोजराज की पत्नी; दादू दयाल (1544-1603): राजस्थान के कबीर, पीठ नरैना में।

> **त्वरित दोहराव:** घूमर राज्य नृत्य; कालबेलिया यूनेस्को 2010; चरी (किशनगढ़), तेरहताली (कामड़, 13 मंजीरे), कच्छी घोड़ी (शेखावाटी), गैर (होली); पाबूजी-कोलू, तेजाजी-खड़नाल, रामदेवजी-रामदेवरा, गोगाजी-गोगामेड़ी, करणी माता-देशनोक, देवनारायण-आसींद; पुष्कर कार्तिक पूर्णिमा, गणगौर, तीज, बेणेश्वर; मेवाड़, मारवाड़, ढूँढाड़, हाड़ौती स्कूल; बणी-ठणी (निहालचंद); शाहपुरा की फड़; डिंगल और पिंगल; मीराबाई; नरैना में दादू दयाल।

राजस्थान के दुर्ग, स्मारक और प्रसिद्ध व्यक्तित्व

दुर्गों के प्रकार: प्राचीन भारतीय ग्रंथ दुर्गों को उनकी प्राकृतिक सुरक्षा के आधार पर बाँटते हैं: गिरि दुर्ग पहाड़ी पर होता है (चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़), जल दुर्ग पानी से घिरा होता है (गागरोन), धान्वन दुर्ग मरुस्थल में होता है (जैसलमेर) और पारिख दुर्ग खाई से सुरक्षित होता है (भरतपुर का लोहागढ़)। छह दुर्ग, चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, रणथंभौर, गागरोन, आमेर और जैसलमेर, 2013 में 'राजस्थान के पहाड़ी दुर्ग' नाम से एक साथ यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किए गए। मेहरानगढ़, जूनागढ़ और तारागढ़ प्रसिद्ध हैं, पर इस सूची में शामिल नहीं हैं।

चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, रणथंभौर और गागरोन: गंभीरी और बेड़च नदियों के ऊपर एक पठार पर स्थित चित्तौड़गढ़ भारत के सबसे बड़े दुर्गों में से एक है; इसमें राणा कुंभा द्वारा 1437 में मालवा पर विजय के बाद बनवाया गया नौ मंज़िला विजय स्तंभ, आदिनाथ को समर्पित पुराना जैन कीर्ति स्तंभ, पद्मिनी महल, कुंभा महल और मीरा मंदिर हैं। राजसमंद में कुंभा द्वारा शिल्पी मंडन की सहायता से बनवाए गए कुंभलगढ़ की दीवार लगभग 36 किमी लंबी है, जिसे प्रायः विश्व की दूसरी सबसे लंबी दीवार कहा जाता है, और परंपरा के अनुसार यह महाराणा प्रताप की जन्मस्थली है। चौहानों का गढ़ रहा सवाई माधोपुर का रणथंभौर 1301 में अलाउद्दीन के हाथ गया; इसमें त्रिनेत्र गणेश मंदिर है। झालावाड़ का गागरोन आहू और कालीसिंध के संगम पर बना जल दुर्ग है, जो खींची चौहानों की राजधानी था और जहाँ 1423 और 1444 में साके हुए।

आमेर, जैसलमेर और जयपुर: जयपुर के पास कछवाहों की पुरानी राजधानी आमेर का निर्माण राजा मानसिंह प्रथम ने 16वीं शताब्दी के अंत में शुरू करवाया; इसमें शीश महल और शिला देवी मंदिर हैं, और इसके ऊपर स्थित जयगढ़ दुर्ग में जयबाण तोप है, जिसे पहियों पर रखी विश्व की सबसे बड़ी तोप कहा जाता है। रावल जैसल द्वारा 1156 में त्रिकूट पहाड़ी पर पीले बलुआ पत्थर से बनवाया गया जैसलमेर का सोनार किला एक जीवंत दुर्ग है, जिसकी दीवारों के भीतर घर बसे हैं और जिसमें 99 बुर्ज हैं। जयपुर की स्थापना 1727 में सवाई जयसिंह द्वितीय ने की; विद्याधर भट्टाचार्य ने इसे जाल (ग्रिड) प्रतिरूप पर नियोजित किया, 1876 में प्रिंस ऑफ़ वेल्स के स्वागत में इसे गुलाबी रंगा गया, और 2019 में इसे विश्व धरोहर नगर के रूप में अंकित किया गया। जयसिंह की पाँच वेधशालाओं में सबसे बड़ी जयपुर की जंतर मंतर (अन्य दिल्ली, उज्जैन, वाराणसी और मथुरा में हैं), जिसमें विश्व की सबसे बड़ी पत्थर की सूर्यघड़ी सम्राट यंत्र है, 2010 में विश्व धरोहर स्थल बनी। सवाई प्रताप सिंह द्वारा 1799 में बनवाए गए और लालचंद उस्ता द्वारा कृष्ण के मुकुट के आकार में रचित हवा महल में 953 छोटी खिड़कियाँ (झरोखे) हैं।

अन्य दुर्ग और महल: राव जोधा द्वारा 1459 में चिड़ियाटूंक पहाड़ी पर बनवाए गए जोधपुर के मेहरानगढ़ में मोती महल, फूल महल और शीश महल हैं; इसके पास संगमरमर का स्मारक जसवंत थड़ा है, और अलग छीतर पहाड़ी पर उम्मेद भवन पैलेस (1929-1943) है, जो अंशतः अकाल राहत कार्य के रूप में बना। राजा रायसिंह द्वारा अपने मंत्री कर्मचंद की देखरेख में 1589-1594 में बनवाया गया बीकानेर का जूनागढ़ मैदान पर बना स्थल दुर्ग है। महाराजा सूरजमल द्वारा मिट्टी की प्राचीरों और खाई के साथ बनवाया गया भरतपुर का लोहागढ़ 1805 में लॉर्ड लेक की घेराबंदी के आगे टिका रहा। चौहानों का पहाड़ी दुर्ग तारागढ़ अजमेर के ऊपर स्थित है।

मंदिर और तीर्थ: माउंट आबू के दिलवाड़ा जैन मंदिर संगमरमर पर नक्काशी की उत्कृष्ट कृतियाँ हैं: सोलंकी राजा भीमदेव प्रथम के मंत्री विमलशाह द्वारा आदिनाथ के लिए बनवाया गया विमल वसही (1031), और वस्तुपाल तथा तेजपाल भाइयों द्वारा नेमिनाथ के लिए बनवाया गया लूण वसही (1230)। पाली का रणकपुर मंदिर आदिनाथ का चौमुखा मंदिर है, जिसे राणा कुंभा के शासनकाल में 1439 में धरणशाह ने शिल्पी देपा की सहायता से बनवाया; इसमें नक्काशीदार 1,444 स्तंभ हैं, जिनमें कोई दो एक जैसे नहीं हैं। अजमेर में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती (गरीब नवाज़, मृत्यु 1236) की दरगाह के वार्षिक उर्स में सभी धर्मों के तीर्थयात्री आते हैं, और पास ही अढ़ाई दिन का झोंपड़ा है। पुष्कर में ब्रह्मा के गिने-चुने मंदिरों में से एक है, नाथद्वारा में श्रीनाथजी का मंदिर है, जिनकी प्रतिमा को महाराणा राजसिंह ने औरंगज़ेब से बचाकर शरण दी, और बाड़मेर के पास किराडू के मंदिर राजस्थान का खजुराहो कहलाते हैं।

व्यक्तित्व: पिछले पाठों के राजाओं और योद्धाओं के अतिरिक्त परीक्षाओं में इन सुप्रतिष्ठित व्यक्तित्वों के बारे में पूछा जाता है। बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह ने गंगनहर (1927) बनवाई और वे नरेंद्र मंडल (चैंबर ऑफ़ प्रिंसेज़) के पहले चांसलर (1921) थे। राजस्थान सरकार के पहले प्रमुख हीरालाल शास्त्री ने महिला

शिक्षा के लिए वनस्थली विद्यापीठ (1935) की स्थापना की। डूंगरपुर के रास्तापाल की भील बालिका कालीबाई 1947 में अपने शिक्षक सेंगाभाई को बचाते हुए गोली लगने से शहीद हुईं। बीकानेर की अल्लाह जिलाई बाई ने मांड गीत 'केसरिया बालम' को प्रसिद्ध बनाया। विजयदान देथा ('बिज्जी') ने 'बातां री फुलवारी' में राजस्थानी लोककथाओं को फिर से कहा और लोकविद् कोमल कोठारी के साथ बोरुंदा में रूपायन संस्थान बनाया। कन्हैयालाल सेठिया ने 'धरती धोरां री' गीत लिखा। पन्ना धाय, भामाशाह, अमृता देवी बिश्नोई और भीनमाल के गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त अन्य ऐसे नाम हैं जो प्रश्नों में बार-बार आते हैं।

उदाहरण

- राजस्थान के पहाड़ी दुर्ग (यूनेस्को 2013): चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, रणथंभौर, गागरोन, आमेर और जैसलमेर।
- विजय स्तंभ: राणा कुंभा द्वारा निर्मित, नौ मंज़िला, सारंगपुर में 1437 की विजय के बाद; कीर्ति स्तंभ: आदिनाथ को समर्पित पुराना जैन स्तंभ।
- कुंभलगढ़: शिल्पी मंडन, लगभग 36 किमी लंबी दीवार; गागरोन: आहू-कालीसिंध संगम पर जल दुर्ग।
- जैसलमेर का सोनार किला: रावल जैसल, 1156, त्रिकूट पहाड़ी, 99 बुर्जों वाला जीवंत दुर्ग।
- जयपुर: 1727 में सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा स्थापित, विद्याधर भट्टाचार्य द्वारा नियोजित, 1876 में गुलाबी रंगा गया, यूनेस्को विश्व धरोहर नगर 2019।
- जंतर मंतर, जयपुर: यूनेस्को 2010, सम्राट यंत्र सबसे बड़ी पत्थर की सूर्यघड़ी; हवा महल: 1799, लालचंद उस्ता, 953 खिड़कियाँ।
- मेहरानगढ़: राव जोधा, 1459, चिड़ियाटूंक पहाड़ी; जूनागढ़: रायसिंह और कर्मचंद, 1589-1594; लोहागढ़: सूरजमल, 1805 में लेक की घेराबंदी के आगे टिका।
- दिलवाड़ा: विमल वसही 1031 (विमलशाह), लूण वसही 1230 (वस्तुपाल-तेजपाल); रणकपुर: 1439, धरणशाह, 1,444 स्तंभ।
- अजमेर शरीफ़: ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह; बाड़मेर के पास किराडू मंदिर: राजस्थान का खजुराहो।
- गंगा सिंह: गंगनहर 1927, नरेंद्र मंडल के पहले चांसलर; हीरालाल शास्त्री: वनस्थली 1935; रास्तापाल की कालीबाई, 1947।

> **त्वरित दोहराव:** छह पहाड़ी दुर्ग यूनेस्को 2013 (चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, रणथंभौर, गागरोन, आमेर, जैसलमेर); गागरोन जल दुर्ग; कुंभलगढ़ की दीवार 36 किमी; सोनार किला 1156; जयपुर 1727, गुलाबी 1876, यूनेस्को 2019; जंतर मंतर यूनेस्को 2010; हवा महल 1799, 953 खिड़कियाँ; मेहरानगढ़ 1459; जूनागढ़ 1589-94; लोहागढ़ 1805; दिलवाड़ा 1031 और 1230; रणकपुर 1439, 1,444 स्तंभ; अजमेर दरगाह; गंगा सिंह; हीरालाल शास्त्री; कालीबाई।

मुफ़्त अभ्यास प्रश्न: parikshasaathi.com/hi/q/rajasthan-state-gk/

दोहराव पत्रक

हर पाठ का त्वरित दोहराव एक जगह - परीक्षा से पहले की आख़िरी पढ़ाई के लिए।

राजस्थान सामान्य ज्ञान	सबसे बड़ा राज्य, पाकिस्तान सीमा 1,070 किमी; गुरु शिखर 1,722 मीटर अरावली की सर्वोच्च चोटी; बप्पा रावल ने मेवाड़, राव जोधा ने जोधपुर 1459, जयसिंह द्वितीय ने जयपुर 1727 बसाया; खानवा 1527, हल्दीघाटी 1576; वृहत् राजस्थान 30 मार्च 1949 (राजस्थान दिवस), प्रथम CM हीरालाल शास्त्री; विधान सभा 200, HC जोधपुर; पंचायती राज नागौर 2 अक्टूबर 1959; सांभर सबसे बड़ी खारी झील, केवलादेव UNESCO; जावर जस्ता, खेतड़ी ताँबा, मकराना संगमरमर; कालबेलिया UNESCO 2010; छह पहाड़ी दुर्ग UNESCO 2013; खेजड़ली 1730 अमृता देवी।
प्राचीन राजस्थान: कालीबंगा, आहड़-बनास संस्कृति, मत्स्य और प्रतिहार	बागोर मध्यपाषाणकालीन (कोठारी नदी, वी.एन. मिश्र); कालीबंगा हड़प्पाकालीन, घग्घर तट, हनुमानगढ़, जुता खेत और अग्निवेदिकाएँ, लाल-थापर 1961-69; आहड़ (धूलकोट, ताम्रवती) से आहड़-बनास संस्कृति का नाम; बालाथल में लगभग 2000 ई.पू. का कुष्ठ रोग वाला कंकाल; गणेश्वर ताँबा, कांतली का उद्गम; मत्स्य की राजधानी विराटनगर (बैराठ), भाब्रू अभिलेख; बयाना गुप्त निधि 1946; भीनमाल में ब्रह्मगुप्त 628 ई.; प्रतिहार गुर्जरत्रा से, मिहिरभोज का शासन कन्नौज से।
राजपूत राजवंश और मध्यकालीन राजस्थान: मेवाड़, मारवाड़, आमेर और चौहान	पृथ्वीराज रासो में अग्निकुल की कथा; अजयराज ने अजमेर बसाया; तराइन 1191 में जीत, 1192 में हार; रणथंभौर 1301 पहला साका; चित्तौड़ के साके 1303, 1535, 1568; हम्मीर से सिसोदिया वंश; कुंभा: सारंगपुर 1437, विजय स्तंभ, कुंभलगढ़; खानवा 1527; हल्दीघाटी 18 जून 1576, दिवेर 1582; संधि 1615; जोधपुर 1459, बीकानेर 1488; गिरी-सुमेल 1544; भारमल-अकबर 1562; कोटा अलग 1631।
आधुनिक राजस्थान: 1857, किसान और जनजातीय आंदोलन तथा प्रजामंडल	1817-18 की संधियाँ (पहले करौली, अंत में सिरोही 1823); अजमेर 1818 में सौंपा गया, AGG का मुख्यालय अजमेर; 1857 का आरंभ नसीराबाद 28 मई, आउवा (कुशाल सिंह), कोटा (मेजर बर्टन की हत्या); बिजोलिया 1897-1941 (सीताराम दास, पथिक, माणिक्यलाल वर्मा); बेगूं 1921; डाबी 1923 (नानक भील); नीमूचाणा 1925; गोविंद गुरु, सम्प सभा 1883, मानगढ़ 17 नवंबर 1913; एकी आंदोलन 1921 (तेजावत); प्रजामंडल 1931 से; 19 रियासतें, 3 ठिकाने।
राजस्थान का निर्माण: एकीकरण के सात चरण, राजव्यवस्था और राज्य प्रतीक	राजस्थान नाम 26 जनवरी 1950 को अपनाया गया; मत्स्य संघ 18 मार्च 1948 (अलवर); राजस्थान संघ 25 मार्च 1948 (कोटा); संयुक्त राजस्थान 18 अप्रैल 1948 (उदयपुर, नेहरू); वृहत् राजस्थान 30 मार्च 1949 (जयपुर, पटेल, राजस्थान दिवस); मत्स्य का विलय 15 मई 1949; सिरोही 26 जनवरी 1950; अजमेर-मेरवाड़ा 1 नवंबर 1956, पहले राज्यपाल गुरुमुख निहाल सिंह; विधानसभा 200, लोकसभा 25, राज्यसभा 10; उच्च न्यायालय जोधपुर 29 अगस्त 1949; पंचायती राज नागौर 2 अक्टूबर 1959।
राजस्थान का भूगोल: स्थिति, सीमाएँ और भौतिक विभाग	23°3'-30°12' उत्तरी अक्षांश, 69°30'-78°17' पूर्वी देशांतर; उत्तर-दक्षिण 826 किमी, पूर्व-पश्चिम 869 किमी; क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किमी (10.41%), 2000 से सबसे बड़ा राज्य; पाकिस्तान सीमा 1,070 किमी (हिंदूमलकोट से बाखासर), सबसे लंबा भाग जैसलमेर में; सबसे लंबी अंतरराज्यीय सीमा मध्य प्रदेश, सबसे छोटी पंजाब; मरुस्थल 61%, अरावली 9%, मैदान 23%, हाड़ौती 7%; अरावली 692 किमी (राज्य में 550 किमी); गुरु शिखर 1,722 मीटर; लाठी सीरीज़; जनगणना 2011: घनत्व 200, लिंगानुपात 928।
राजस्थान की नदियाँ, झीलें और जल परियोजनाएँ	अरावली से बंगाल की खाड़ी, अरब सागर और आंतरिक अपवाह का विभाजन; चंबल प्रायः एकमात्र बारहमासी नदी कही जाती है, गांधी सागर-राणा प्रताप सागर-जवाहर सागर-कोटा बैराज; बनास पूर्णतः राज्य में बहने वाली सबसे लंबी नदी, बीसलपुर बाँध; माही कर्क रेखा को दो बार काटती है, बेणेश्वर; लूनी बालोतरा के बाद खारी, जोजड़ी एकमात्र दाईं सहायक नदी; घग्घर = हकरा; सांभर सबसे बड़ी अंतर्देशीय खारी झील (रामसर 1990); जयसमंद, राजसमंद (राजप्रशस्ति); इंदिरा गांधी नहर हरिके से, 649 किमी।
राजस्थान की जलवायु, मिट्टियाँ, वन और वन्यजीव	पश्चिम शुष्क, मध्य अर्द्ध-शुष्क, दक्षिण-पूर्व उप-आर्द्र; फलोदी 51°C, 19 मई 2016; लू, आँधी, मावठ; वर्षा दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर घटती है, माउंट आबू सर्वाधिक, जैसलमेर सबसे शुष्क; 25 सेमी और 50 सेमी समवर्षा रेखाएँ; रेतीली, जलोढ़, लाल और काली मिट्टियाँ, सेम; धोकड़ा सबसे आम वृक्ष; रणथंभौर 1973, सरिस्का 2008 स्थानांतरण, मुकुंदरा 2013; केवलादेव यूनेस्को 1985; मरु राष्ट्रीय उद्यान में गोडावण, आकल जीवाश्म; खेजड़ली 1730, 363 बिश्नोई, जांभोजी 1485।
राजस्थान की कृषि, खनिज और उद्योग	वर्षा-आधारित खेती; बाजरा, सरसों, ग्वार, मोठ में अग्रणी; गंगानगर अन्न भंडार; सबसे अधिक ऊँट, प्रमुख ऊन उत्पादक; राठी, थारपारकर, चोकला नस्लें; खनिजों का अजायबघर: जावर और रामपुरा आगूचा जस्ता-सीसा, खेतड़ी ताँबा, डेगाना टंगस्टन, झामरकोटड़ा रॉक फॉस्फेट, जिप्सम, वोलेस्टोनाइट, मकराना संगमरमर; बाड़मेर तेल 2004/2009; रावतभाटा 1973; भड़ला सौर पार्क; कृष्णा मिल्स ब्यावर 1889; लाखेरी सीमेंट 1915; ब्लू पॉटरी, सांगानेर, बगरू, थेवा, कोटा डोरिया।
राजस्थान की कला और संस्कृति: लोक नृत्य, लोक देवता, मेले, चित्रकला और बोलियाँ	घूमर राज्य नृत्य; कालबेलिया यूनेस्को 2010; चरी (किशनगढ़), तेरहताली (कामड़, 13 मंजीरे), कच्छी घोड़ी (शेखावाटी), गैर (होली); पाबूजी-कोलू, तेजाजी-खड़नाल, रामदेवजी-रामदेवरा, गोगाजी-गोगामेड़ी, करणी माता-देशनोक, देवनारायण-आसींद; पुष्कर कार्तिक पूर्णिमा, गणगौर, तीज, बेणेश्वर; मेवाड़, मारवाड़, ढूँढाड़, हाड़ौती स्कूल; बणी-ठणी (निहालचंद); शाहपुरा की फड़; डिंगल और पिंगल; मीराबाई; नरैना में दादू दयाल।
राजस्थान के दुर्ग, स्मारक और प्रसिद्ध व्यक्तित्व	छह पहाड़ी दुर्ग यूनेस्को 2013 (चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, रणथंभौर, गागरोन, आमेर, जैसलमेर); गागरोन जल दुर्ग; कुंभलगढ़ की दीवार 36 किमी; सोनार किला 1156; जयपुर 1727, गुलाबी 1876, यूनेस्को 2019; जंतर मंतर यूनेस्को 2010; हवा महल 1799, 953 खिड़कियाँ; मेहरानगढ़ 1459; जूनागढ़ 1589-94; लोहागढ़ 1805; दिलवाड़ा 1031 और 1230; रणकपुर 1439, 1,444 स्तंभ; अजमेर दरगाह; गंगा सिंह; हीरालाल शास्त्री; कालीबाई।

Pariksha Saathi एक स्वतंत्र परियोजना है और किसी भर्ती संस्था या सरकारी विभाग से संबद्ध नहीं है। हर विषय के नोट्स: parikshasaathi.com/downloads/